तेज पाक्षिक मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : ६ वर्ष : १८ १५ मार्च १९८२
दीवाना
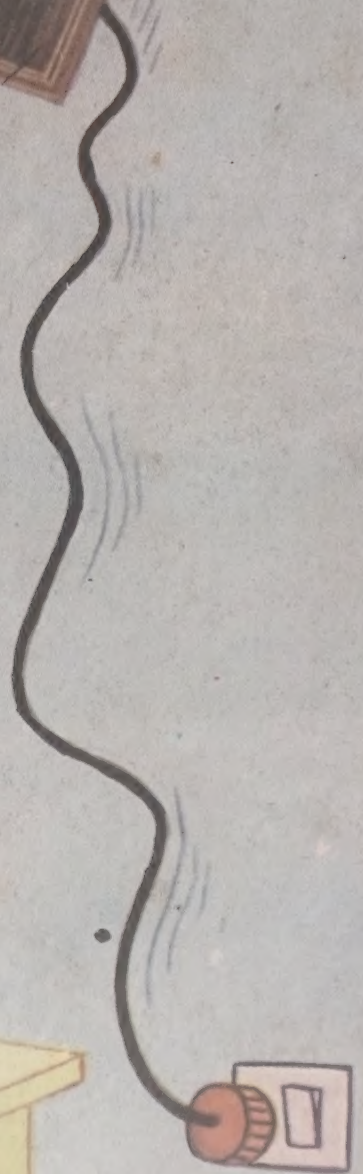
लल्लू

आज नीमा से डेट है। बड़ी होशियारी का काम है। अपनी ही गलतियों के कारण कई अच्छी-अच्छी गर्ल फ्रैन्डों से हाथ धो चुका हूं। इस बार ऐसा लल्लूपना नहीं होने दूंगा।

बेटा जरा तुम थोड़ी देर मेरी बकरी को पकड़े रहना। मेरी दो बकरियां यहां पार्क में खो गयीं, एक तो यह मिल गयी, मैं दूसरी को ढूंढ़ लाता हूं।
कोई बात नहीं, यह तो परोपकार का काम है।

आज क्या बात हो गयी? नीमा अब तक नहीं आई। वैसे तो वह टायम की बड़ी पाबन्द है। उसकी वेट करते हुये एक घंटा हो गया और वह बकरी वाले महाशय भी नहीं आये। अकेला यहां बैठा-बैठा बोर हो रहा हूं क्यों न बोरियत दूर करने के लिये कुछ किया जाये . . . लेकिन क्या . . .

इस बकरी को नीमा समझ इससे बात करता हूं। एक पंथ दो काज हो जायेंगे। डायलॉग बोलने का रिहर्सल भी हो जायेगा।
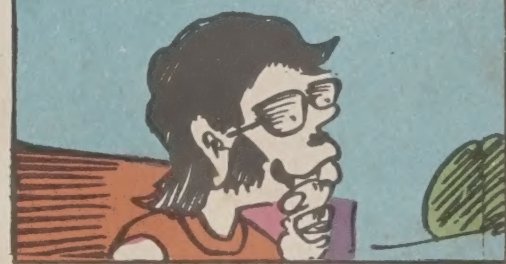
हाय! मैं डेढ़ घंटे लेट हो गयी, लल्लू पता नहीं क्या सोच रहा होगा। उसे कैसे समझाऊंगी कि मेरी घड़ी बंद हो गयी थी।

नीमा तुम कितनी अच्छी हो। तुम्हारी लम्बी भूरी-भूरी आंखें सोफिया लारेन जैसी हैं। तुम्हारे दांत कितने चमकीले हैं। बाल तो रेशम से मुलायम हैं। जब तुम मैं मैं करती हो तो ऐसे लगता है जैसे फूल झड़ रहे हों। नीमा डार्लिंग मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।
?

यह क्या तमाशा है। तुम एक बकरी से प्यार की बातें कर रहे हो?
ओह तुम आ गयीं? मैं बकरी से नहीं तुमसे बातें कर रहा था टायम पास करने लिये मैंने इसे ही तुम मान कर डायलॉग बोला था। तुम लेट भी तो कितनी हो गयी हो?

गोया तुम ने मुझे बकरी समझा। तुम इस बकरी से मेरी तुलना कर रहे हो? अब मैं तुमसे कभी नहीं बोलूंगी। मुझसे कभी मिलने की कोशिश न करना, हमारा तुम्हारा खेल खत्म! छुट्टी
हो गया लल्लूपन

परिवार नियोजन के संग-संग कौन सा नियोजन चल सकता है ?

जी हाँ ! धन का नियोजन

क्योंकि कारगर धन नियोजन भी तो वही उद्देश्य हासिल करना चाहता है जो कि परिवार नियोजन के उद्देश्य हैं। परिवार के प्रत्येक व्यक्ति के लिये एक सुखी और सुरक्षित जीवन प्रदान करना ही तो इसका लक्ष्य है।

आवर्ती जमा योजना
छोटी छोटी रकमें जमा करते जाइए और जल्दी ही जीवन आराम से बिताइये.

मियादी जमा योजना
अपने बच्चे की उच्च शिक्षा की योजना बनाइए.

अपने 'धन का नियोजन' करने से संबंधित हमारी अनेक योजनाओं की जानकारी के लिये हमारी नजदीकी शाखा में पधारिये.

निरंतर पेन्शन योजना
कुछ वर्षों तक बचत कीजिए और जीवनभर के लिये आमदनी का इंतजाम कीजिये।

स्टेट बैंक
सुरक्षा एक सुखद अनुभूति

CHAITRA-SBI-747 HIN

राजा जी

चोबदार आज मेरा दिल बहुत उदास है। ऐसे लगता है जैसे कोई कीमती चीज़ खो गयी हो।
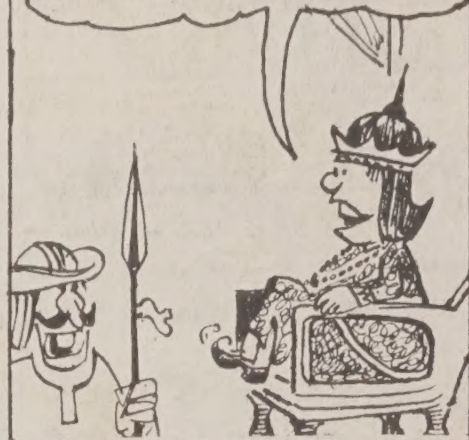
गुस्ताखी माफ हजूर! यह उदासी शायद मूंछें न होने के कारण है। आपने मूंछें कटवा कर गलती की। आप के रुआब और शान में वह चीज दिखाई नहीं दे रही।
झाऊ टाम लग रहा है बगैर मूंछों के।

जी, राजा कहता है कि आज उसका दिल उदास है। क्या आज्ञा है?
सर्कस दिखा लाओ
ही ही ही ही क्षमा कीजिए

पिछली बार मैं राजा जी को सर्कस ले गया था। सर्कस का मैनेजर उनको अपने सर्कस का जोकर समझ बैठा और आकर पूछने लगा यह जोकर दर्शकों के बीच बैठा क्या कर रहा है। मेकअप रूम में क्यों नहीं जाता। तब राजा बोला आगे से कभी सर्कस का नाम लिया तो वह मेरा सिर कटवा देगा।
हो हो हो

एक नई डांसर आई है उसी को पकड़ कर ले आओ
जो आज्ञा
2

महाराज यह कैब्रे डांसर मौना है
इसे सैक्सी किटन का खिताब मिला हुआ है।
सैक्सी किटन?

इज़ाजत है मां बदौलत के हजूर में नाचो और अपने फन का कमाल दिखाओ
क्या बात है? तुम नाचती क्यों नहीं?
मुझे आपत्ति है

यह तो बगैर डांस दिखाये चली गयी।

महाराज वह कहती है कि वह केवल 'ए' सर्टिफिकेट वाली "फॉर एडल्टस ओनली" प्रोग्राम करती है। राजा बच्चा दिखाई देता है। वह डांस नहीं करेगी।
हमारी शान में यह गुस्ताखी महामंत्री उस रक्कासा को हाथी के पैरों तले कुचलवा दो
हम उस हाथी के पैरों तले इसलिये नहीं कुचलवां सकते चूंकि हमारे शाही हाथी की उम्र कुल १२ वर्ष है और मोना २१ वर्ष से अधिक आयुवालों के लिये ही प्रोग्राम करती है।

आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष: किन्हीं विशेष या शुभफलों की भले ही आशा न हो परन्तु यह पखवाड़ा सुधारों की सूचना देता है, कुछ उतार-चढ़ाव भी देखने में आएंगे एवं संघर्ष भी काफी रहेगा, किसी मित्र या सम्बन्धी से विरोध के कारण चिन्ता।

वृष: यह पखवाड़ा मिश्रित फलों से युक्त है, आलस्य का प्रभाव प्रकट होगा, हिस्सेदारों से झगड़ा, परिश्रम का फल भी पूरा न मिलेगा, सहयोगी मदद करेंगे. लाभ के चान्स मिलेंगे, यात्रा सफल, सावधानी अनिवार्य है.

मिथुन: धन की प्राप्ति होने से परिवार की दशा संभलेगी, परिश्रम से लाभ होगा एवं बिगड़े काम भी पूरे होंगे, आलस्य एवं रोग दूर भागेगा, परन्तु घर-बाहर वाद-विवाद एवं फिर पड़ोसियों से विरोध के कारण परेशानी.

कर्क: काफी संघर्षपूर्ण दिन हैं, सावधानी से एवं सोच-विचार कर काम करने में ही भलाई है, वर्ना आप किसी भारी संकट में पड़ सकते हैं, भाई की ओर से चिन्ता, सत्कर्म करने से रुके कामों में सफलता

सिंह: रोग, शत्रु एवं बाधाएं उत्पन्न हो कर दब जाएंगी, नवीन कार्य से हानि परन्तु स्थायी कामधन्धों से लाभ होते रहेंगे, कठिन परिश्रम एवं संघर्ष का सामना, यह पखवाड़ा शुभ-अशुभ मिश्रितफलों से युक्त है.

कन्या: शुभफलों से युक्त होने पर भी यह पखवाड़ा किसी अप्रिय घटना के होने की सूचना देता है, हालात ठीक ही चलेंगे और कामधन्धों की पूर्ति भी होगी अधिक परिश्रम सेलाभ होगा. भाग्य सहारा देगा।

तुला: इस पखवाड़े में अच्छे-बुरे मिले-जुले फल मिलेंगे, परिश्रम एवं संघर्ष का जोर बढ़ेगा, रोज़गार में उन्नति एवं लाभ के अवसर आएंगे, नई योजना लाभदायक रहेगी, किसी-किसी समय धन की कमी.

वृश्चिक: यह पखवाड़ा विशेष अच्छा तो नहीं फिर भी कठिन परिश्रम से कुछ कार्य सिद्ध हो सकेंगे, हिम्मत से काम लें और आत्मसंतुलन बनाएं रखें, भाई से सहयोग कारोबार से लाभ होता रहेगा।
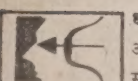
धनु: बीते दिनों की तुलना में यह पखवाड़ा अच्छा रहेगा, परिश्रम के अनुसार लाभ एवं सफलता की प्राप्ति, वातावरण में भी शान्ति एवं उत्साह बढ़ेगा, धन व्यय के साथ-साथ लाभ भी होता रहेगा.

मकर: संघर्ष एवं विवाद में उलझना आपके लिए ठीक नहीं, वैसे देखा जाए तो यह पखवाड़ा अच्छा है परन्तु लाभ की प्राप्ति एवं हालात में सुधार लाने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
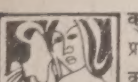
कुम्भ: परिस्थिति में शुभ परिवर्तन होंगे, प्रयासों में सफलता, उत्साह बढ़ेगा, राजकीय कामों में विजय पाने के लिए आपको काफी दौड़धूप एवं व्यय करना पड़ेगा, भाग्य सहारा देगा, कार्यों में सफलता.
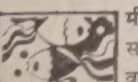
मीन: यह पखवाड़ा विशेष अच्छा नहीं, सावधानी अनिवार्य है, आलस्य से बचें वर्ना लाभ एवं सफलता समय पर न मिल सकेगी, जल्दबाज़ी से काम लेना ठीक नहीं वैर विरोध से बचें

मैं पिछले डेढ़-दो साल से दीवाना का नियमित पाठक हूं। और इस बात में कोई शक नहीं कि जिसने दीवाना को एक बार पढ़ लिया हो और वह इसका नियमित पाठक न बना हो। हर अंक की तरह अंक तीन भी मजेदार रहा। कृपया बहुचर्चित फिल्म 'मेरी आवाज सुनो' की पैरोडी देने का कष्ट करें। धन्यवाद।

—वेद प्रकाश 'अमित', घौण्डा, दिल्ली

आप के दीवाना के हर अंक को पढ़ता हूं जो कि एक से बढ़ कर एक रुचिकर होते हैं पर अंक ३, १ फरवरी का (रंग और व्यंग टेलीफोन के संग) लेख पढ़ कर मन बहुत खुश हुआ। मेरा मन हुआ कि ऐसे अच्छे और स्वच्छ लेख छापने पर आप को बधाई दे दूं। धन्यवाद।

सुभाष चन्द्र कपूर, नई दिल्ली

आज ही दीवाना अंक ३ मिला। मोटू-पतलू, पिलपिल-सिलबिल व सभी फीचर बेहद पसंद आए. कहानी-रिश्वत रानी (सलीम शहजाद लिखित) हास्य व्यंग की सुंदर रचना थी—कृपया इसी प्रकार हास्य रचनाऐं देते रहें।

स्नेह कुमार 'नीर', सोगानेर सिटी

दीवाना का अंक ३ प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ देख कर हंसी का फव्वारा छूट पड़ा। असरानी का पोस्टर पसंद आया. कृपया 'दीवाना' को हमेशा के लिये बड़े साइज में रखें। 'रंग और व्यंग टेलीफोन के संग' (डा. विजय भारद्वाज) हास्य कथा बेहद पसंद आयी।

—सुरेश कुमार रोहरा, रानी रोड, कोरबा

दीवाना का अंक चार मिला। मुख पृष्ठ पर चिल्लियों की इतनी संख्या देख कर बहुत प्रसन्नता हुई। इस अंक में परोपकारी, लल्लू, मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल तथा नया स्तंभ राजा जी काफी रोचक थे जिन्हें पढ़ कर हंसते-२ पेट में बल पड़ गये। "टैंडर आमन्त्रित हैं" भी काफी हास्यप्रद रहा। प्रेत नाथ की कहानी चीखती घड़ी का रहस्य काफी रहस्यपूर्ण कहानी लगती है। आपसे अनुरोध है कि आप दीवानी चिपकियां न दिया करें क्योंकि पूरा पृष्ट वैसे ही खराब हो जाता है। हां, अगर चिल्ली लीला फिर से आरंभ कर दें तो पत्रिका और अधिक रोचक हो जायेगी। आशा है भविष्य में भी दीवाना हमें अपना दीवाना बनाता रहेगा। अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

—परमजीत सुलैच "पम्मी"
राम नगर, करनाल

दीवाना अंक चार दूसरी बार पढ़ने को मिला। इस बार का अंक पिछली बार से अधिक मनोरंजक लगा। अंक तीन और चार पढ़ने के बाद अब मैं आपका नियमित पाठक बन गया हूं। आशा है आप अगला अंक इन अंकों से अधिक अच्छे स्तंभो सहित प्रस्तुत करेंगे।

ओमप्रकाश भाटिया, नई दिल्ली

दीवाना अंक ४, १९ फरवरी को प्राप्त हुआ मुख पृष्ठ देख कर पेट में दर्द होने लगा। चीखती घड़ी का रहस्य, कहावतें और मुहावरे, सिलबिल-पिलपिल तथा गरीब चन्द की डाक बेहद पसंद आये। काका के कारतूस तथा चाचा बातूनी न पाकर मायूस हो गये। कृपया आगे से इस बात का ध्यान दें।

राजू गुलाटी 'सोनू'
तिलक नगर मार्किट दिल्ली

मुख पृष्ठ पर

चल नीचे आ रे चिल्ली
अब यह खेल हुआ पुराना
टूट जायेगा टीवी हमारा
बन्द कर बीन बजाना।
बन्द कर बीन बजाना
नहीं तो पछतायेगा
'स्विच' करें हम 'आफ'
तू नीचे गिर जायेगा॥

अंक: ६ वर्ष: १८ १५ मार्च १९८२

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज पाक्षिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

(प्रहलाद नारायण रायजादा)

चेला, नगर का सर्वेक्षण करके लौटा तो गुरू ने प्रश्न किया, "बेटा चम्पक ! बता क्या देखकर आया ?" चेले ने उत्तर दिया, "अहा क्या कहने हैं, गुलाबी नगरी के !" चौड़ी-चौड़ी सड़कें, दोनों तरफ दुकानें, दरवाजे और दीवारें, गुलाबी ही गुलाबी !...." गुरू—मूरख कहीं का ! अरे, क्या हम रंग से होली खलेंगे ? सड़कों पर घोड़े दौड़ायेंगे ? . . ये बता अपना धंधा कैसा चलेगा ?

चेला-खूब चलेगा ! वहां तो रिक्षा वाले फुटपाथ पर नोट रखकर दाव लगाते हैं।

—अरे ओ घनचक्कर ! हमें रिक्षा वालों से क्या लेना-देना है ?

—रिक्षावाले ही नहीं लखपति और करोड़-पति भी सट्टा लगाते हैं।

—ये हुई कुछ बात काम की ! . . . .सेठों की बात कर, सेठों की !

—गुरूदेव ! रोज रात को दौड़ होती है।

—फिर बकवास ! ----- रात को घुड़ दौड़ ?

—घुड़ दौड़ नहीं, सट्टा दौड़ ! सटोरिये १ से ९ अंक तक सट्टा लगाते हैं ! जो अंक निकलता है उस पर लगाई हुई रकमका दुगना मिलता है।

—अरे मूर्ख ! हम साधु सट्टा लगायेंगे।

—सट्टा लगायेंगे नहीं, सटोरियों को अंक बतायेंगे ! . . . .गुरूदेव ! किसी धनी सटोरिये को फांसा जाये। . . . .अपना बताया हुआ अंक निकल आये तो पौबारह पच्चीस हैं।

—और जो नहीं निकले ? तब तो पड़े न बिना भावके।

—क्यूं न कोई ऐसी योजना बनाई जाये, जिसमें 'बींद मरे या बींदनी, नाई का टका खरा।'

किसी लक्ष्मी जी की सवारी को कामधेनु बताकर दुहने की योजना।

—शाबाश ! बेटा ! यही एक बात कही है तूने अकल की।

गुरू और चेले ने मिलकर एक नवदिवसीय योजना बनाई और गुलाबी नगरी में आकर रहने लगे। सब से बड़े नौ सटोरियों की एक सूची तैयार की गई। सभी का नाम पता आदि नोट कर लिया। नौ प्रकार के स्वांग भरने की सामग्री जुटाई।

प्रथम दिवस। प्रातःकाल गुरू और चेला सटोरिया नंबर एक, सेठ लक्ष्मीचंद की कोठी की ओर चल पड़े . . . .गुरू मौनी बाबा बने थे। वे मौन साधे सेठ की कोठी के सामने सड़क के उस पार ध्यानमग्न बैठ गये। चेला चला कोठी के फाटक पर। वह कोठी में घुसने लगा। दरबान ने टोका, "कौन हो ? क्या चाहते हो ?" चेला बोला, "धत्तेरे की ! शुभकाम में विघ्न डाल दिया ! . . . .मौनी बाबा को मौज आ गई थी। मैं तो सेठ लक्ष्मी चंद को लाखों का लाभ कराने जा रहा था।"

दरवान—आजकल तो सेठ को टोटा ही टोटा हो रहा है।

चेला—होने दो ! मौनी बाबा तो तरकीब बता देंगे कि एकरात में लाखों के वारे-न्यारे हो जायेंगे ! . . . .हाँऽ ! ! . . .भगवान छत फाड़कर देने वाला है।

—बम-बर्षा होगी क्या ?

—बम-बर्षा नहीं, नोटों की वर्षा ! सौ-सौ के नोट की गड्डियां ! ! (कान में) मौनी बाबा सट्टे में निकलने वाला अंक बता देंगे !

दरबान दंग ! 'इन्हें कैसे मालूम सेठ सट्टा लगाता है ?' वह प्रश्न चिन्ह बना सोचने लगा। चेला भांप गया। वह बोला, "गुरू को दिव्य दृष्टि प्राप्त है ! उन्हें सब दीख जाता है। सेठ को लाखों का लाभ होगा ! दो चार हजार तुझे भी दिला देता ! तेरी गरीबी काफूर हो जाती। पर तूने तो अपनी जन्मपत्री को ही ठोकर मार दी ! अब खड़ा रह, कंधे पर बन्दूक धरे।"

चेले की वाकपटुता का दरबान पर जादुई असर हुआ। उसने कहा, "क्षमा करो महाराज ! मुझे नहीं मालूम था कि आप ऐसे पहुंचे हुए हैं।

चेला—पहुंचे हुए हम नहीं हमारे गुरू मौनी बाबा हैं, जो सामने बैठे हैं।

दरबान—जाइये ! जाइये ! अंदर जाइये ! सेठ जी अंदर हैं।

—अब हम नहीं जायेंगे !

—अच्छा, तो ठहरिये ! मैं सेठ जी को बुलाकर लाता हूं।

दरबान ने अंक वाली बात सेठ के कान में कही। सेठ ढीलीढाली धोती हाथ में पकड़े हुए नंगे पावों नंगे सिर दौड़ा। वह फाटक पर खड़े चेले को ही मौनी बाबा जानकर साष्टांग दंडवत करने लगा। चेले ने सेठ को पकड़ कर उठाते हुए कहा, "सेठ जी ! मौनी बाबा, मेरे गुरुदेव तो वो सामने ध्यना मग्न बैठे हुए हैं ! आप बड़े ही भाग्यशाली हैं जो बाबा को मौज आ गई ! आपकी कोठी के सामने बैठे गये।

सेठ—(प्रसन्नहोकर) प्यांऽऽऽ ! जाओ जी चेला जी ! जाओ ! बाबा जी कूं बुलाकर लाओ।

चेला—सेठ जी ! गंगा को तो भागीरथ ही ला सकता है।

—प्यांऽऽ ! आछो। आछो ! थे म्हारा सात चालो। म्हे थाकूं खुशकर दैला।

चेला (बिगड़कर) सेठ जी हम ऐसे-वैसे साधु नहीं हैं ! हम कुछ नहीं लेंगे हांऽऽऽऽ ! . . . .

—धन्न घड़ी ! धन्न भाग ! थे चालो म्हारे सात ! . . . .

ढीली धोती संभालता हुआ सेठ मौनी बाबा के निकट पहुंचा। उसने हाथ जोड़े। साष्टांग दंडवत किया। मौनी बाबा मौन ! आंखें मूंदे ! सेठ चिंतित ! वह उठा ही नहीं ! जमीनपर लेटा ही रहा ! चेले ने कहा, "गुरुदेव ! सेठ लक्ष्मीचंद प्रणाम कर रहे हैं आर्शीवाद दीजिए !" बाबा ने आंखें नहीं खोलीं। हाथ उठाकर आशीर्वाद दे दिया। मौन नहीं तोड़ा। वैसे ही बैठे रहे। सेठ ने खड़े होकर हाथ जोड़े और निवेदन किया, प्यांऽऽ ! बाबाजी ! थे म्हारी कोठी माईं पधारो जी !

बाबा उठे और चल दिये। सेठ उनके आगे हो लिया। चेला पीछे था। बाबा ने कोठी में प्रवेश किया। दरबान थाल में फल और मिठाई लाया। बाबा ने देखा तक नहीं, संकेत द्वारा सेठ को एक ओर ले जा कर गुप्त रूप से कहा, "बच्चा ! तेरे ऊपर लक्ष्मी की कृपा होने वाली है ! (दोनों हाथों की उंगलियों से नौकी संख्या का ज्ञान कराते हुए) यह अंक निकलेगा होली की रात्रि को ! दिल खोलकर धन लगा देना ! सावधान ! यह परम गोपनीय रहस्य किसी को मालूम न हो जाये ! यदि तूने किसी से कह दिया तो यह अंक नहीं निकलेगा। तू हार जायेगा।" इतना कह कर मौनी बाबा मौन हो गये ! सेठ देखता रह गया। उसने अंटी में से पांच रुपये का नोट निकालकर बाबा को भेंट किया। बाबा ने छुआ तक नहीं वे तीर की भांति कोठी से बाहर निकल आये। चेला उनके पीछे हो लिया। सेठ मूर्ति की तरह खड़ा देखता रह गया। बाबा अन्तर्ध्यान होगये।

गुरु-चेला नौ दिन तक भिन्न स्वांग भरकर अंक बताते रहे। नौ सटोरियों को १ से ९ तक के सभी अंक बता दिये। प्रत्येक सटोरिये को एक पृथक अंक बताया गया था। योजनानुसार सब कार्य सम्पन्न होने पर होली की रात्रि के पूर्व गुरु-चेला भूमिगत हो गये ! तत्पश्चात किसी ने उन्हें कहीं नहीं देखा ! . . . .

होली मंगलने से पूर्व की संध्या ! आज सट्टा भवन में असाधारण चहल-पहल थी। सभी सटोरियों में अत्यधिक उत्साह था। आज प्रत्येक अंक पर भारी रकम लगाई गई थी।
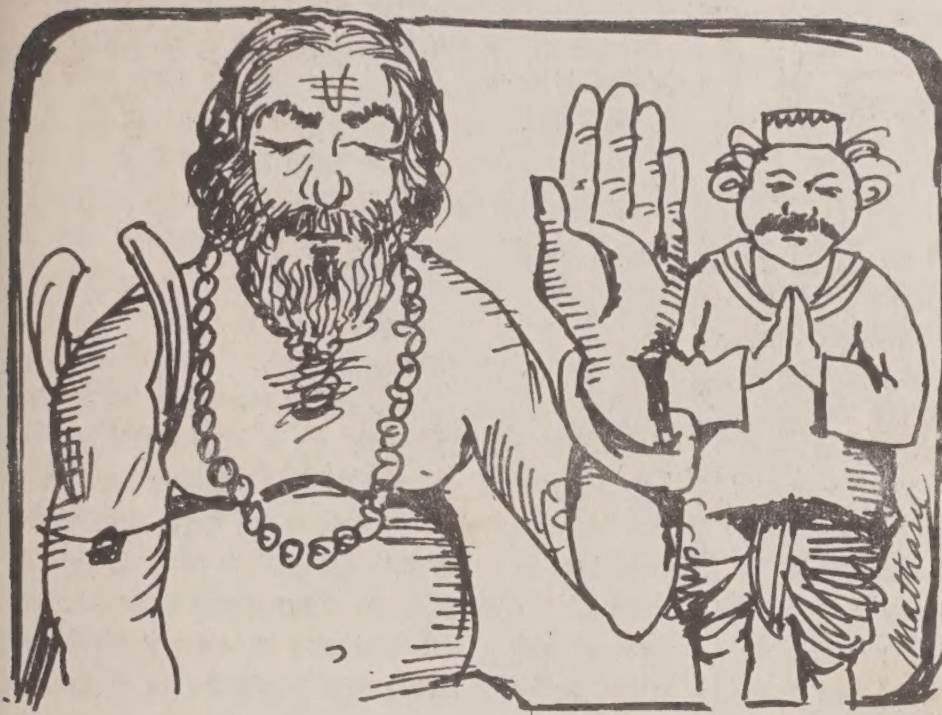
चम्पक लाल सटोरिये की वेश भूषा में वहीं उपस्थित था। वह अंक निकलने की बाट जोह रहा था। एक अप्रत्याशित व्यक्ति को अकेले अंधेरे में खड़ा देख कर सटोरिये को संदेह हुआ। 'कहीं खुफिया पुलिस तो नहीं'। उसने समीप आकर प्रश्न किये, ''आप कौन हैं? कहां से आये हैं? यहां अंधेरे में क्यों खड़े हैं? आपको यहां कौन जानता है?'' प्रश्नों की झड़ी लग जाने से चम्पक चकराया! किंकर्त्तव्यविमूढ़! सौभाग्य से उसी क्षण ''नौ-नौ'' की हर्ष ध्वनि हुई! सट्टा भवन गूंज उठा- ''नौ-नौ'' सटोरिया, '''हाय लुट गया!'' कहता हुआ भागा! धक्का-मक्की, हायतोबा और भाग दौड़ में चम्पक लाल को मौका मिल गया। वह चम्पत हो गया।

प्रातःकाल! सेठ लक्ष्मीचंद का समस्त परिवार प्रसन्न था, क्यों न हो? रात लक्ष्मी की वर्षा हुई थी! सेठ जी विस्तरों में पड़े थे। मन ही मन प्रसन्न! पर पश्चाताप कुछ कम न था। ''हाय, बीस हजार रुपये ही लगाए! क्यूं ने बीस लाख लगा दिये! हाय! बाबा ने कहा था, ''बच्चा! दिल खोलकर धन लगाना!'' ...'अब की बार मौनी बाबा बता दें तो पूरे पचास लाख लगा दूंगा!' सेठ यही सब सोच रहा था। अचानक उसके कानों में भनक पड़ी। दरबान चिल्ला रहा था, ''सेठ संभालता हुआ पुकारने लगा, ''सेट्ठाणी! सेट्ठाणी! अरीओ भली मानस! काई करै छै? बाबा आ रह्या छै!!'' पुकारता हुआ नंगे सिर, और नंगे पांव दौड़ा।

फाटक पर सेठ परिवार तैयार खड़ा था। गुरु चेला धीमे-धीमे आ रहे थे, सेठ ने आगे बढ़ कर सड़क पर ही साष्टांग दंडवत की। दरबान ने फौजीसैल्यूट मारी। सेठ के लड़के ने फूलमाला पहिनाई सेठानी ने धूपदीप और कपूर जलाकर आरती उतारी, सेठ ने पांच के नोटों की गड्डी बाबा के चरणों में चढ़ाई। चेले ने चट उठाकर बगल में दबी पोटली में रख ली। गुरु चेले को सम्मान सहित वातानुकूलित कमरे में ठहराया गया। चांदी के थालों में नाना प्रकार के पकवान फल और मिठाई आई। गुरू चेले ने छककर भोजन किया और पड़कर सो गये।

तीसरे पहर! मौनी बाबा जागे, पर बिस्तरों में ही पड़े रहे! सेठ को चिन्ता हुई। 'बाबा की तबियत तो खराब नहीं। अधिक भोजन कर लेने के कारण आजीर्ण तो नहीं हो गयो? ...हे, भगवान! मौनी बाबा की रक्षा करना! सट्टे का अंक मालूम करना है! उसने पूछा, ''चेला जी! काई बात छै? बाबा उठो क्यूं नहीं?'' चेले ने तार की भाषा में उत्तर दिया, ''बाबा को शिवजी की बूटी!'' सेठ ने तुरन्त नौकर को दौड़ाया। नौकर दूध, केसर, बादाम और पिस्ते पड़ी भरी चरी भंग ठंडाई लेकर आया। गुरु चेले ने दो-दो लोटे चढ़ाई।

संध्या समय! बाबा पूजा गृह में। रत्न जटित संगमरमर के सिंहासन से कृष्ण की पत्थर की मूर्ति को हटाकर साक्षत भागवान मौनीबाबा को विराजमान किया गया! मूर्ति के गले से सुनहरी गोटे का हार उतार कर बाबा को पहिनाया गया। समवेत स्वरों में विधिवत आरती उतारकर सेठ ने पांच के नोटों की एक और गड्डी बाबा को भेंट की पर यह क्या? मौनी बाबा मौन! निश्चल! न आशीर्वाद दिया, न चेले को गड्डी उठा लेने का संकेत! सेठ घबराया! ''भगवान!

अनजाने में कोई गलती हो गई हो तो क्षमा करो!'' बाबा अब भी मौन! चेले ने कहा ''बाबा को रबड़ी!''

दो चांदी के थाल लबालब रबड़ी से भरे हुए आये! गुरु-चेले के सम्मुख रख दिये गये। सेठ ने हाथ जोड़ कर नम्र निवेदन किया, ''भगवान! रबड़ी आ गई।'' उसी क्षण अनेक सटोरियों ने मौनी बाबा के दर्शनाथ पूजा गृह में प्रवेश किया। उन सभी को सेठ लक्ष्मी चंद ने सट्टे की जीत के उपलक्ष में भंग ठंडाई और रबड़ी का निमंत्रण दिया। सभी ने मौनी बाबा को प्रणाम किया! बाबा ने दायां हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया!

रात वाले सटोरियो को चेलेपर संदेह हुआ। 'कल रात सट्टा भवन में यही तो नहीं था? उसने निकट जाकर गौर से देखा और पहिचान लिया हां यही सटोरिये की वेश भूषा में था। क्या यही मस्त बाबा का चेला था? हाँ यही मस्त बाबा का चेला था। तो क्या यह मौनी बाबा ही मस्त बाबा बना था।

शायद! पर इस के दाढ़ी है। मस्त बाबा घोट-मोट क्लीन शेव्ड था। इसकी दाढ़ी नकली तो नहीं हो सकती है। इसका तो पता लगाना चाहिए।

सटोरिया सोचता रहा। उसने भंग के नशे का अभिनय आरंभ किया। वह खूब हंसा। हंसते हंसते बाबा के चरणों में जा बैठा और लगा चरण दबाने। हंसते-हंसते बाबा की दाढ़ी खींच ली। दाढ़ी बाबा के चेहरे से पृथक हो, सटोरिये के हाथ में आ गई। दर्शक दंग रहे गये!! सटोरिया गंभीर हो चिल्लाया, मौनी बाबा ढोंगी है! इसी ने मुझे मस्त बाबा का स्वांग बना कर आठ का अंक बताया था। गुरु चेला घबराये। बाबा ने मौन तोड़ कर कहा, ''नहीं-नहीं, बच्चा! आप को भ्रम हो गया है।''

सेठ ने नोटों की गड्डी उठा कर अंटी में दबा ली। सटोरिये ने चेले की पोटली छीनी। उसमें से निकल पड़ी पांच के नोटों की दूसरी गड्डी, सेठानी ने वह चट उठा ली। पोटली खुली। उसमें विभिन्न प्रकार के स्वांग भरने की सामग्री निकली। जिन सटोरियों को अंक बताये थे वे सब वहां मौजूद थे। सबने भारी रकम हारी थी। अतएव गुरु चेले पर रोष अत्याधिक था। बाबा को सिंहासन से खींचकर पृथ्वी पर पटक दिया गया। गुरु और चेला दोनों की लात और घूंसों से खूब अच्छी मरम्मत की गई, पर पुलिस के भय से सारी कार्यवाही गुप्त रखी गई।

भगवान श्रीकृष्ण को उनका सिंहासन और गले का हार पुनः प्राप्त हुआ। गुरु-चेले को चुपचाप स्टेशन ले जाया गया। दोनों का बम्बई का टिकट कटाया और रेल-गाड़ी में सवार करा दिया। जब तक गाड़ी रवाना न हो गई सब सटोरिये उन्हें देखते रहे। ●

पिछले दिनों लाखों साल आगे से आये एक वैज्ञानिक की टाईम मशीन मोटू-पतलू के हाथ लग गई थी. वैज्ञानिक ने उन्हें टाईम मशीन के आविष्कार और उसकी कार्यप्रणाली का सिद्धांत समझाते हुये बताया था कि जिस प्रकार एक मोटर गाड़ी सड़क पर चल कर हमें आगे या पीछे ले जा सकती है, इसी प्रकार टाईम मशीन समय के धारे पर चल कर हमें आगे या पीछे ले जा सकती है.

वह वैज्ञानिक तो आगे के युग में पहुंच कर उड़ने वाले बन्दरों के चंगुल में फंसा रह गया है और अब मोटू-पतलू और उन के साथी टाईम मशीन पर सवार हो कर पहुंच गये हैं, आज से ३१०००० साल आगे के युग में. यानि आप जब यह दीवाना पढ़ रहे हैं तो कैलैंडर का साल है १९८२. और जहां मोटू-पतलू हैं वहां कैलैंडर का साल है ३११९८२.

उस युग में विज्ञान की प्रगति अपनी चर्म सीमा पर है अंतरिक्ष की दौड़ में समस्त ब्रह्माण्ड कहीं का कहीं पहुंच गया है जैसे हमारे जमाने में स्कूटर धायें-धायें करके सड़कों पर दौड़ रहे हैं, वैसे ही उस युग में अंतरिक्ष वाहनों की घमा घमी है.

उस युग में मंगल ग्रह से आये तांबे जैसे लाल रंग के प्राणियों ने धरती पर आक्रमण कर के यहां अपना अधिकार जमा लिया है. मंगल ग्रह वालों के वैज्ञानिक धरती के वैज्ञानिकों से कहीं अधिक कुशल हैं. उन की विनाशकारी शक्ति अपार है. उन के पास 'एक्सनोबियम'' नाम का एक ऐसा विस्फोटक पदार्थ है, जो हमारी खतरनाक 'लैजर बीम'' से भी कई हजार गुणा अधिक शक्तिशाली और विनाशकारी है. मंगल ग्रह वाले 'एक्सनोबियम'' की भयंकर गर्मी से बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों और कारखानों को ज्वालामुखी का गर्म लावा बना कर बहा देते हैं और फिर उसे राख का ढेर बना देते हैं. उन्हों ने धरती वालों के वैज्ञानिक केन्द्रों को मलियामेट कर दिया है. और अंतरिक्ष प्रयोगशालाओं को मिट्टी में मिला दिया है.

तीन लाख दस हजार साल आगे विज्ञान के इस विनाशकारी युग में पहुंचने पर पतलू, चेला राम और घसीटा राम तो मंगल ग्रह से आये तांबे जैसे लाल रंग के प्राणियों के चंगुल में फंस गये हैं और धरती वालों के एक गुप्त अंतरिक्ष केन्द्र से उड़े अंतरिक्ष यान में सवार हो कर मोटू, डाक्टर झटका और जूडो मास्टर मंगल ग्रह पर पहुँच गये हैं, जहां उन का अंतरिक्ष यान नष्ट हो गया है.

अब इस अंतरिक्ष यान के वैज्ञानिकों का काम है यह पता लगाना कि मंगल ग्रह वालों के पास 'एक्सनोबियम'' का कितना भंडार है और इस भंडार का सूत्र कहां है? इस समय धरती पर पहुंचे मंगल ग्रह सत्ताधारियों का 'एक्सनोबियम'' का स्टाक समाप्त हो रहा है, और इसके बिना धरती पर कब्जा जमाये रखना उन के लिये कठिन है. उन्होंने मंगल ग्रह पर अपने केन्द्र से सम्पर्क स्थापित कर के एक्सनोबियम की नई खेप भेजने की मांग की है. इधर मंगल ग्रह के अधिकारियों ने धरती पर पहुंचे अपने साथियों को बताया है कि उन्हें धरती के कुछ असली वासी चाहियें. उन पर प्रयोग करके वे यह देखना चाहते हैं, कि एक्सनोबियम की जो नई उन्नत खेप तैयार की गई है वह धरती के वासियों को किस तीव्रता से मौत के घाट उतारती है. धरती पर जमे मंगल ग्रह वालों ने अपने अधिकारियों को बताया है मौत के इस परीक्षण के लिये वे धरती से पांच आदमी भेज रहे हैं. इन पांच आदमियों में बंदी बनाये पतलू, चेला राम और घसीटा राम के नाम आगे-आगे हैं.

इधर मोटू, डाक्टर झटका और जूडो मास्टर धरती के दो वैज्ञानिकों के साथ मंगल ग्रह पर पहुंचे हैं तो वहां के अधिकारियों ने समझा है कि यह धरती से भेजे गये वे पांच आदमी हैं, जिन्हें मार कर नए एक्सनोबियम की शक्ति का पता लगाना है.

अब मौत के चैम्बर में ले जाये जाते समय, मंगल ग्रह के अधिकारी को बेवकूफ बना कर मोटू और डाक्टर झटका ने उस से यह पता लगा लिया है कि एक्सनोबियम का विस्फोटक पदार्थ वे मंगल ग्रह के बड़े चांद से लाते हैं और मंगल ग्रह के शोधक कारखानों में उसे शुद्ध कर के अधिक से अधिक विनाशकारी बनाते हैं. वास्तव में मंगल ग्रह का बड़ा चांद पूरे का पूरा एक्सनोबियम का बना हुआ है. वह लाखों करोड़ों साल तक समाप्त नहीं हो सकता, तब तक मंगल ग्रह वाले सभी ग्रहों और उपग्रहों पर अपना कब्जा जमा चुके होंगे. उन्होंने यह अंतरिक्ष यान भी दिखाया है जिस में एक्सनोबियम की नई उन्नत खेप धरती पर भेजी जाने वाली है.

अब आगे के हंगामे देखिये.

अब मरने का कोई गम नहीं. इन के एक्सनोबियम का राज़ तो मालूम हो गया.
शहद लगा कर चाटो इस हारमोनियम के राज़ को, मरने के बाद तुम्हारी राख कौन कुरेदेगा इस राज़ को जानने के लिये
हम कुरेद लेंगे तुम्हारी राख, तुम इसे बातों में लगा कर इसके साथ मौत के चैम्बर में चले जाओ.

जितनी देर में यह तुम्हें मौत के घाट उतारेगा उतनी देर में हम अपना काम कर जायेंगे.
जवाब नहीं तुम्हारा जहां हमारी खाट खड़ी होगी, वहां अपना खटोला बिछाना चाहते हो.
मरना ही है तो एक आध को मार कर मरेंगे.

अरे वाह, यह तीन लाख साल पीछे के करेले तो बड़ी हिम्मत वाले हैं. एक ही पटख़ी में कबाड़ा कर दिया उस आलूबुख़ारे का.
पकड़ो, पकड़ो
सर पर पांव रख कर भाग लो.
?
पांव में सर दे कर भागने से भी कुछ नहीं होगा. पता है मंगल ग्रह से धरती कितनी दूर है.

अरे कहां मर गये सब पहरेदार ?
अपनी मां की गोद में पड़े निप्पल चूस रहे हैं
अरे यह तो मंगल ग्रह वालों का वह अंतरिक्ष यान है जिस में धरती पर भेजा जाने वाला हारमोनियम भरा है.
हारमोनियम नही एक्सनोबियम.
?
एक्सनोबियम हो, एलमोनियम हो, या सुबरामनियम हो हमारे लिये सब बराबर हैं. बहस में पड़ने की बजाये इस यान में घुस लो जल्दी से

अंतरिक्ष यान के अंदर पहुंच कर
अरे यान के इंजन चलाओ जल्दी से
मैं ने कभी तांगा नहीं चलाया ठीक से.
तुम यान के इंजन चलाने की बात कर रहे हो.

हटो, मुझे आने दो कंट्रोल पर.

वैज्ञानिक ने जैसे ही यान का कंट्रोल सम्भाल कर उस के इंजन स्टार्ट किये, वह अपने बेस से उठ कर आकाश की ओर चल दिया.
इस यान के साथ ही उन के लड़ाकू टैंक भी ऊपर उठे हैं
उन के टैंकों की तोपों का निशाना हमारी तरफ़ है. पर वह हम पर गोला बारी क्यों नहीं कर रहे हैं ?
तीन लाख साल आगे के वैज्ञानिक इतनी औंधी खोपड़ी के होंगे यह मैंने सपने में भी नहीं सोचा था.
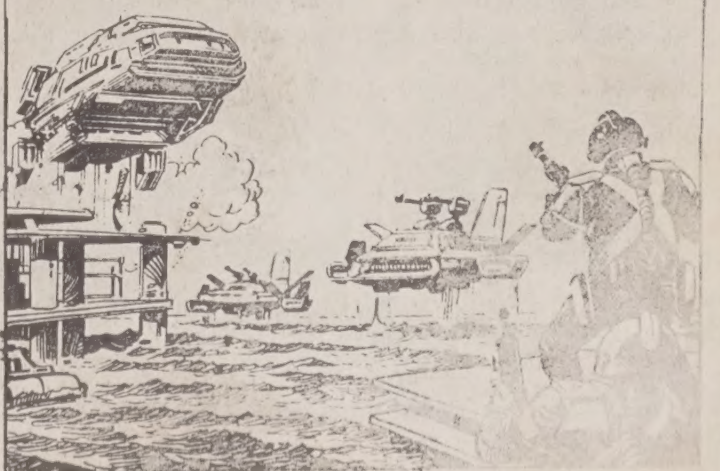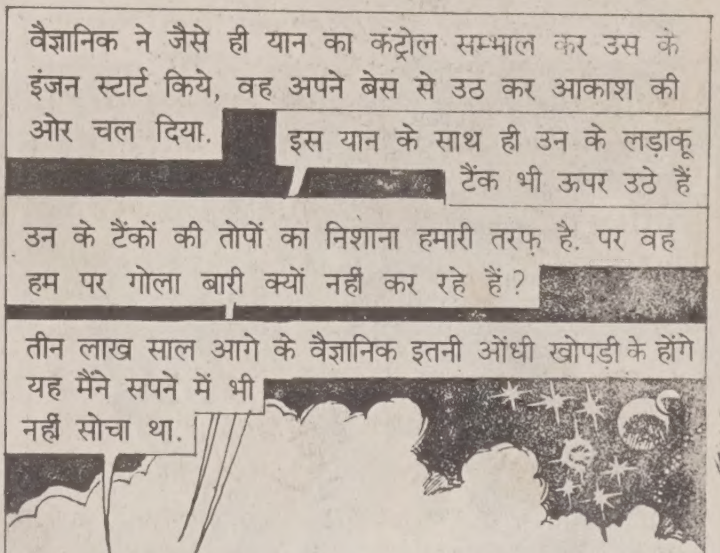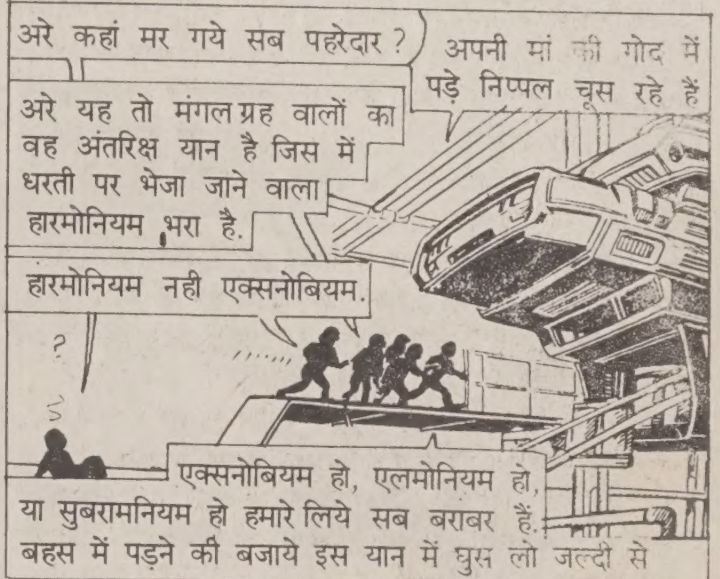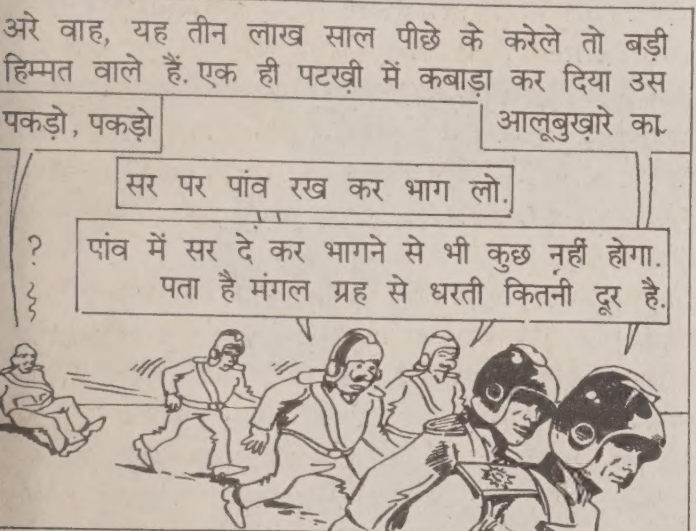
तुम ने कहा था ना यह अत्यंत विनाशकारी विस्फोटक है. तुम भूल गये पर उन्हें याद है. हमारा यान उनके मुख्य अंतरिक्ष केन्द्र के इतना पास है कि उन्होंने हम पर गोलाबारी की तो इस में भरा विस्फोटक इतनी दूर तक मार करेगा कि उनके केन्द्र का नामोनिशान तक मिट जायेगा.
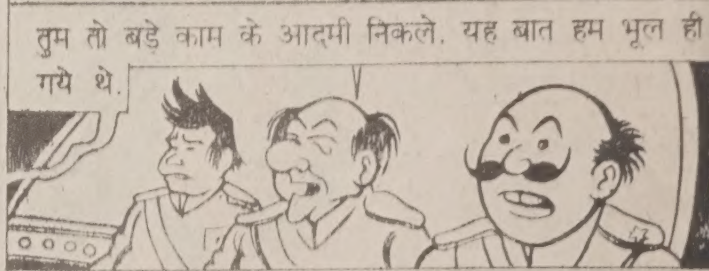
तुम तो बड़े काम के आदमी निकले. यह बात हम भूल ही गये थे.
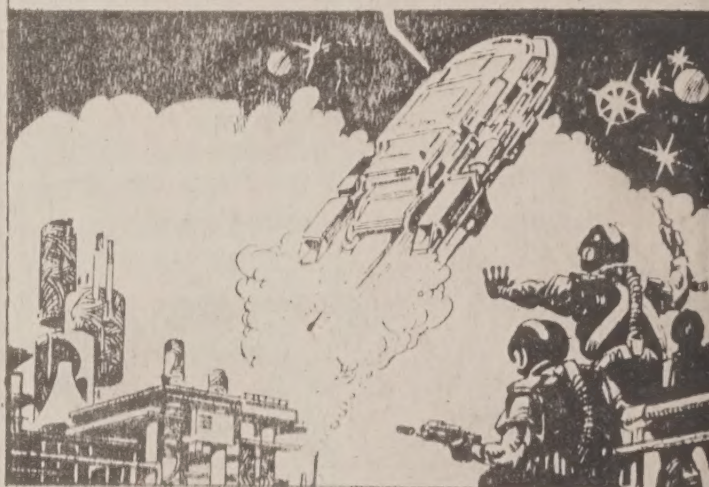
मोटू के मशवरे पर उन वैज्ञानिकों ने मंगल ग्रह के चारों ओर घूम कर उनके सभी केन्द्रों को एक्सनोबियम राकेटों से मलियामेट कर दिया.

तुम तीन लाख साल पुराने आदमी तो बड़े काम की चीज़ निकले. बड़ी पते की बातें बता रहे हो तुम.

हमने मंगल ग्रह वालों के सभी एक्सनोबियम भंडारों का सफाया कर दिया है.

अब वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते.
तुम फिर भूल कर रहे हो. तीन लाख साल आगे के वैज्ञानिक हो पर अक्ल तुम में धेला भर नहीं.
क्या मतलब है तुम्हारा ?

भंडार समाप्त करने ... होता है. एक्सनोबियम ... तो मौजूद है वे ... और ले आयेंगे
अरे यह तो हम भूल ही गये थे. तुम ... आदमी निकले. हमें मंगल ग्रह के उस ... करना होगा, जो सारे का सारा एक्सनोबियम ...
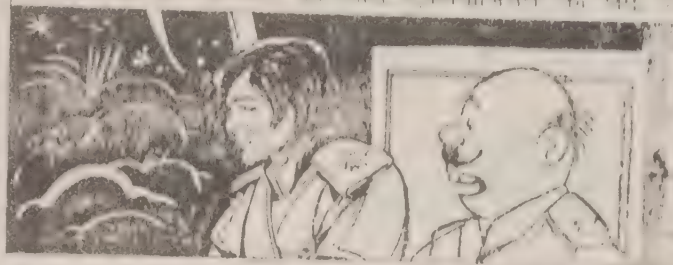
अब उन का अंतरिक्ष यान मंगल ग्रह के बड़े चांद की ओर जा रहा था.
उस उपग्रह क मे धुआं उठ रहा है. अवश्य यह वही चांद है.
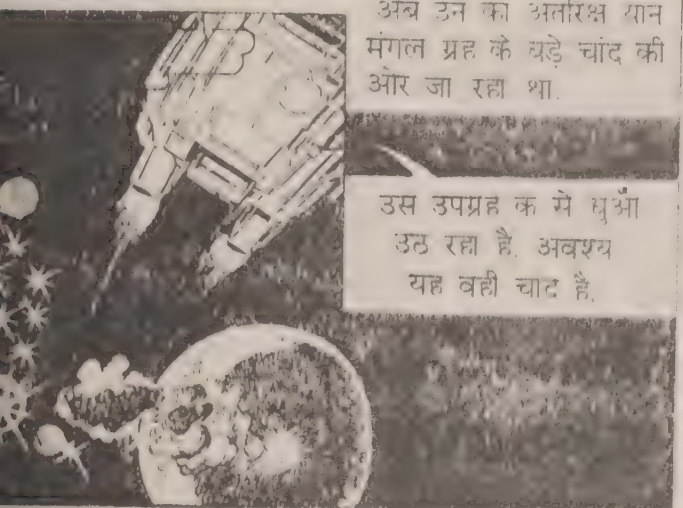
लाखों मील का फासला तय करने के बाद ... मंगल ग्रह के चांद के पास पहुंच गये.
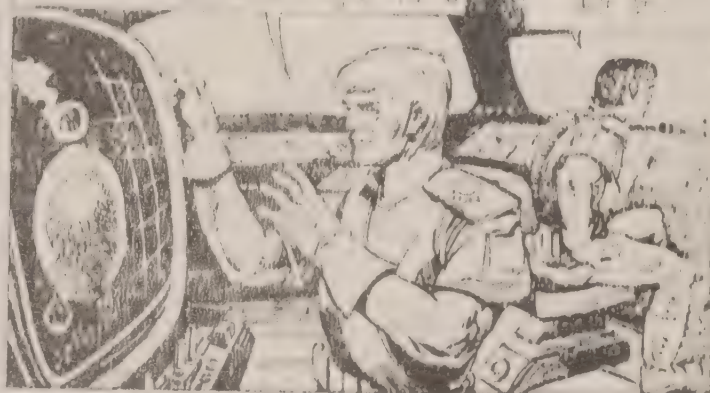
चांद सुरक्षा करने वाला मंगल ग्रह का गश्ती बेड़ा है

ने उन्हें डाज दे दिया.
नहीं उन्होंने हमें देख लिया है.
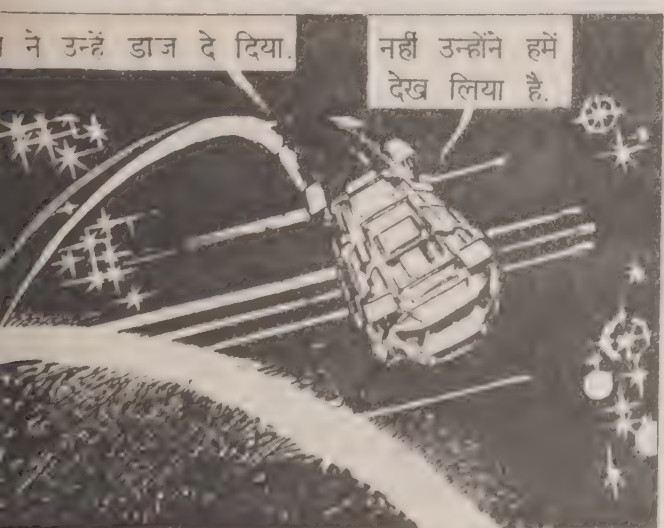
फिर वे हम पर हमला क्यों नहीं कर रहे ?

वही एक्सनोबियम वाली बात है.
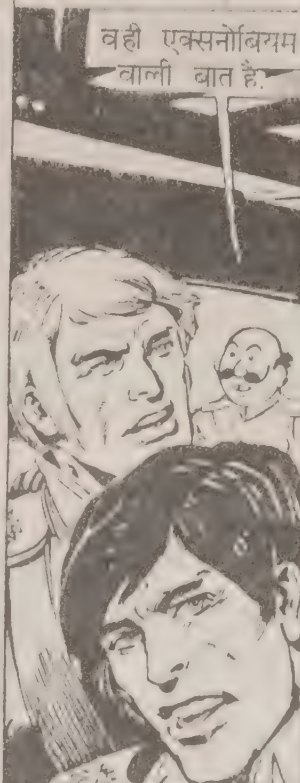
उन्हें अपने मंगल ग्रह के केन्द्र से सूचना मिल गई होगी ... इस अंतरिक्ष यान में कितना विस्फोटक पदार्थ है. वे जान... हैं कि गोलाबारी से हमारा यान नष्ट हो गया तो इस धमाके से न वे बचेंगे और न उन का यान.

यह बात तो हमारे दिमाग़ में आई ही नहीं.
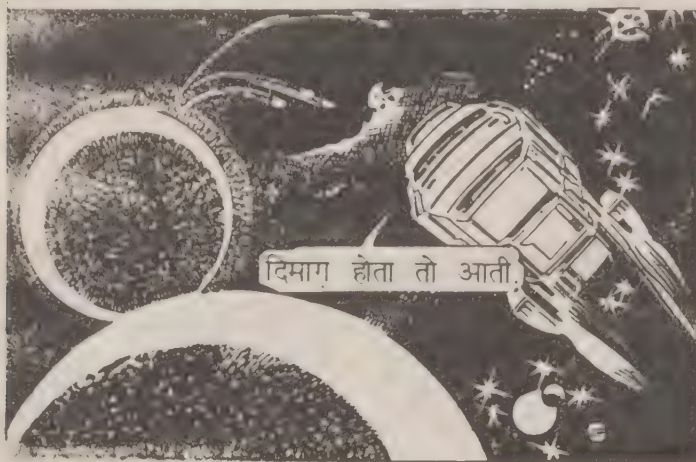
अरे, उनके एक यान ने अपने ही दूसरे यान का सफाया क
दिया.
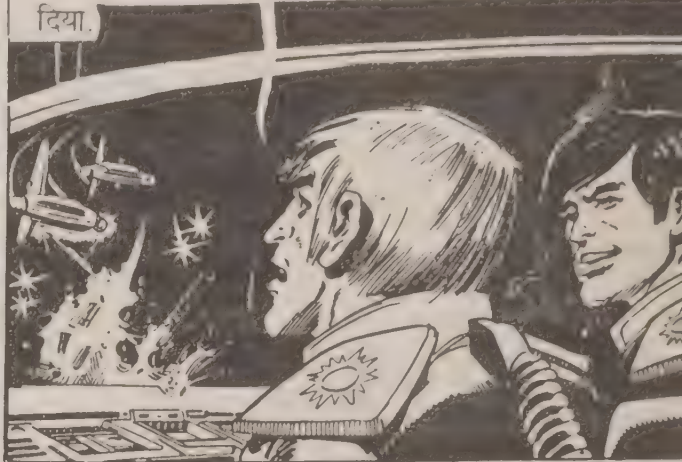
वह गलती से हम पर गोलाबारी करने वाला होगा.

अब उन के सभी यान हम से परे हट कर चल रहे हैं

चांद अब ठीक निशाने पर है. मैं राकेट छोड़ रहा हूं इसका लीवर मैंने पता लगा लिया है.

ध्यान से राकेट छोड़ते ही हमें चांद से दूर भागना है.

ठीक निशाना लगा कर उन्होंने राकेट छोड़ दिया और उसके धमाके से खुद को बचाने के लिये पूरी स्पीड से दूर भाग लिये.
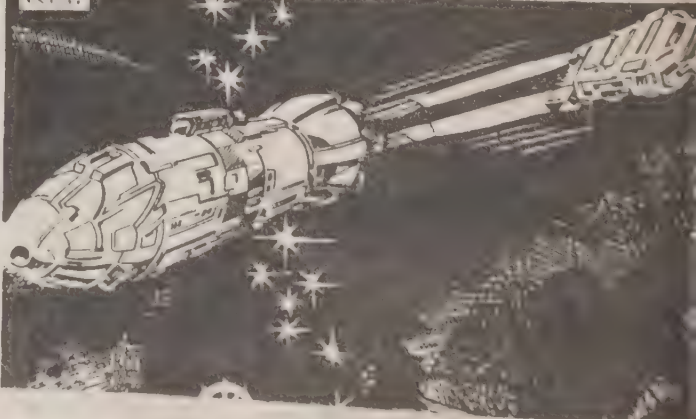
देखते ही देखते वे चांद से बहुत दूर हो गये थे. जैसे ही राकेट चांद से टकराया उसके एक्सनोबियम ने पूरे चांद को एक बहुत बड़े बम की तरह फाड़ दिया.

अब वहां केवल आग थी और गहरा धुआं था. मंगल ग्रह के इस चांद के साथ वहां बसी मंगल ग्रह वालों की बस्तियों का भी सफ़ाया हो गया था. उनके अपने एक्सनोबियम ने पूरे ब्रह्माण्ड में से उन के वंश का सफ़ाया कर दिया.
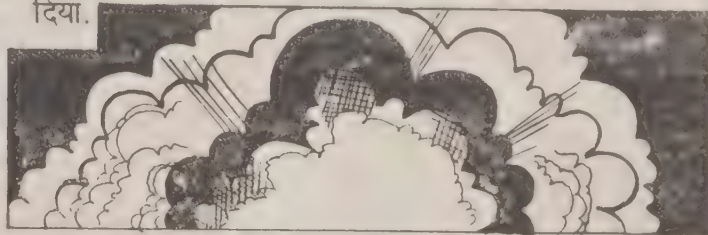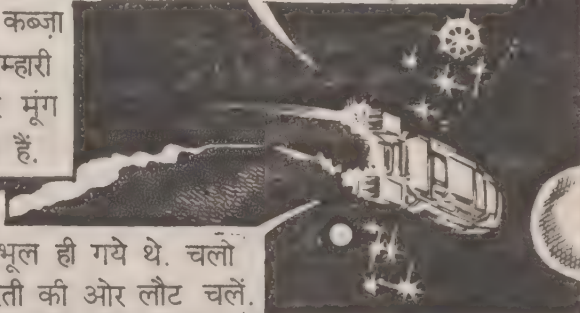
दूसरी ओर धरती पर.

हमारे पास ज़रा सा भी एक्सनोबियम नहीं रहा

रौंगटे खड़े कर देने वाली इस ख़तरनाक कहानी का आख़िरी धमाका देखिये, आगामी अंक में.

लोभी मानव

● महेश प्रसाद साहु ''आश''

यह बात उस समय की है जब सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी जीवों की सृष्टि कर के उनकी आयु निर्धारित कर रहे थे.

उन्होंने सोचा, सभी जीवों को एक ही आयु दे दी जाए और इतनी दी जाए कि वे अच्छी तरह इस संसार में सुख-आनंद प्राप्त कर सकें. तब मृत्यु लोक को जाएं. उन्होंने सभी जीवों को चालीस वर्ष की आयु निर्धारित कर दी. सभी जीव सुख से रहने लगे.

किन्तु मानव सदा ही लोभी रहा है. इसने सोचा, इतनी कम आयु में इतने बड़े संसार में पूर्ण सुख-आनंद प्राप्त करना संभव नहीं, इसलिए क्यों न जा कर ब्रह्माजी से अपनी आयु बढ़वा ली जाए.

मानव तुरन्त ब्रह्माजी के पास पहुंचा और कहने लगा, ''हे प्रभु ! चालीस वर्ष की अल्प आयु में हम मानव का इस संसार में सुख-आनंद भोगना संभव नहीं, अतः हमारी आयु कुछ और बढ़ा दी जाए.''

अब ब्रह्माजी सोचने लगे कि किसकी आयु में कटौती कर मानव की आयु बढ़ा दी जाए. तभी उनका ध्यान बैल की ओर गया. उन्होंने बैल को बुला कर कहा, ''बैल महाशय ! तुम जानते ही हो कि तुम्हारा जन्म मानव सेवा के लिए हुआ है. तुम से मानव कड़ा परिश्रम करवाता है. इसलिए तुम अपनी लंबी उम्र से क्षुब्ध हो जाते होगे. अतः मैं चाहता हूं कि तुम्हारी निर्धारित आयु से बीस वर्ष मानव को दे दूं. बीस वर्ष में तुम अच्छे आनंद एवं लोगों की सेवा कर परलोक सिधार सकते हो.''

आखिर बैल ब्रह्माजी की बात कैसे टाल सकता था, फिर उसे फायदा ही था. तुरंत स्वीकृति दे दी.

अब मानव की आयु साठ वर्ष हो गई. कुछ दिनों तक तो बड़े आनंद से रहा किन्तु फिर इतनी कम आयु में जीवन-मरन के चक्कर में आ गया. इतनी आयु में भी सुख-आनंद प्राप्त करने का मौका नहीं मिलता, इसलिए अपनी आयु की वृद्धि कराने पहुंच गया ब्रह्माजी के पास. जाकर बोला ब्रह्माजी से, ''हे प्रभु ! इतनी कम आयु में हमें सुख संभव नहीं. अतः कुछ आयु और बढ़ा दी जाए.''

''नहीं-नहीं, तुम्हारे कहने पर एक बार बीस वर्ष की आयु बढ़ा दी गई है, अब किसी की निर्धारित आयु कटौती करना संभव नहीं. इतनी आयु में अमन चैन से जीवन बिताकर परलोक में जाओ. अधिक लालच करना ठीक नहीं.'' ब्रह्माजी बोले.

''नहीं प्रभु ! आप समझने की कोशिश कीजिए. हम मानव के लिए इतनी अल्प आयु टिमटिमाते दीप के समान है, जिसका एक हवा का झोंका नामों निशान मिटा देता है . . .'', लोभी मानव गिड़गिड़ा कर बोला.

''मानव, तुम भूल रहे हो कि वही टिमटिमाता दीप अपनी कांपती रोशनी से दूसरों को सही मार्ग दर्शाता है. अपने संसर्ग में ला कर दूसरों को भी ज्योतिर्मय बनाता है . . .''

ब्रह्माजी आगे कुछ बोलते इससे पहले ही मानव बीच में ही बोल पड़ा, ''हमें इससे कुछ मतलब नहीं. कृपया करके हमारी आयु बढ़ा दीजिए.''

ब्रह्माजी सोचने लगे, यह मानव बिना अपनी मांग पूरी करवाये मानेगा नहीं, पर किसकी में कटौती की जाए. तभी उन्हें कुत्तों का याद आया और उन्हें बुलाने के लिए अपने दूत भेज दिए.

कुत्ता, ब्रह्माजी के सामने हाजिर हो गया. ब्रह्माजी बोले, ''कुत्ते, तुम्हें संसार में लोग बुरा-भला कहते हैं. अधिक आयु होने के कारण बुढ़ापे में खाने के लिए तरसते हो. अतः अपनी आधी आयु तुम मानव को दे दो. कम आयु में जल्द मर कर तुम अच्छे जीव में जन्म ले सकते हो.''

कुत्तों ने भी ब्रह्माजी की बात नहीं टाली और अपनी आधी आयु देने को तैयार हो गया. ब्रह्माजी ने कुत्तों की बीस वर्ष आयु फिर मानव को दे दी।

अब मानव की आयु साठ से बढ़कर अस्सी हो गई. बिताने लगा चैन की जिन्दगी, किन्तु मानव को चैन कहां ? उसे इतनी आयु भी बहुत कम लगी और फिर पहुंच गया ब्रह्माजी के पास अपनी आयु बढ़वाने.

अब तो ब्रह्माजी बहुत क्षुब्ध हुए मानव के लोभीपन से वे झल्ला कर बोले, ''अरे लोभी मानव ! तुम जैसे हठी और मूर्ख जीव बना कर मैंने पहली बार बहुत बड़ी भूल की है. तुम अपनी हरकतों से कभी बाज नहीं आओगे. न जाने तुम्हें कितनी आयु चाहिए. यह समझ पाना कठिन है.''

''बस प्रभु ! इस बार केवल हमारी आयु बढ़ा दीजिए. क्या आप नहीं चाहते कि हम चैन की जिन्दगी बिताएं,'' मानव उनके पैरों पर गिर पड़ा.

''मैं कभी अपने रचित जीवों का कष्ट देखना नहीं चाहता, किन्तु तुमने तो मुझे परेशान ही कर डाला. आखिर किस-किस की आयु काट कर तुम्हें देता रहूं,'' ब्रह्माजी सिर पकड़ कर अपने आसन पर बैठ गए.

''रहम कीजिए प्रभु, थोड़ा रहम कीजिए हम पर . . .''

ब्रह्माजी सोच-सोच कर दोहरे हुए जा रहे थे आखिर अब किस जीव की आयु काट कर इस लोभी मानव की मांग पूरी की जाए. तभी उनका ध्यान उल्लू की ओर गया. फिर क्या ? तुरन्त उल्लू को बुलवा कर बोले, ''उल्लू, तुम लोगों की अवहेलना के पात्र हो. तुम्हें लोग अच्छे जीव नहीं कहते. तुम्हारा अधिक दिनों तक जीना दुश्वार है. अतः मैं चाहता हूं, अपनी आयु में से बीस वर्ष इस लोभी मानव को दान कर दो. कम उम्र में मर कर तुम अच्छे जीव में जन्म ले सकते हो.''

कैसे टाल सकता था उल्लू ब्रह्माजी की बात. अपनी आयु के बीस वर्ष नेक कार्य में दान कर दिये.

अब मानव ने जिन तीन जीवों की आयु में कटौती करवा कर अपनी आयु सौ वर्ष करा लीया थी उसका फल भोग रहा है.

पहले तो चालीस वर्ष तक मानव ठीक से जीवन बीताता है किन्तु जब बैल की आयु की बारी आती है बीस वर्ष, तो प्रायः देखा गया है कि मानव चालीस से साठ वर्ष की आयु में बैल की तरह काम करता है. अब चली कुत्ते की आयु, तब साठ से अस्सी वर्ष की आयु में मानव कुत्ते की तरह घर की रखवाली करता है और हमेशा हो हल्ला कुत्ते की तरह करता रहता है. उल्लू की आयु तो अस्सी से सौ तक है. मानव इस आयु में दूसरों पर आश्रित रहता है, एकटक ताकता रहता है कि कब मुझे भोजन मिलेगा, जैसे उल्लू ताकता है.

तो यह है मानव का आदि से ही लोभीपन, जिसके कारण आज दर-दर भटक रहा है. ●

दीवाना कार्ड मोड़कर देखिये

दोनों तीरों को आपस में मिलाइये

आज की युवा पीढ़ी संगीत प्रेमी है और साथ ही उस में साहसिक कार्य करने का अद्‌भुत जोश है। पहाड़ की चोटी पर चढ़ना हो या पैराशूट से कूदना, रेगिस्तान पार करना हो या पैदल भारत भ्रमण करना, स्केटिंग करते हुये शिमला से दिल्ली आना हो या साइकिल पर दुनिया का चक्कर लगाना, युवक-युवतियां सबसे आगे हैं। पहले की पीढ़ियों में यह जोश व बलबला नहीं था। आज की युवा पीढ़ी के पास आखिर वह गुप्त अस्त्र क्या है जो इन्हें ऐसे जोखिम उठा सकने लायक शक्ति प्रदान करता है? उत्तर पृष्ठ मोडने पर मिलेगा।
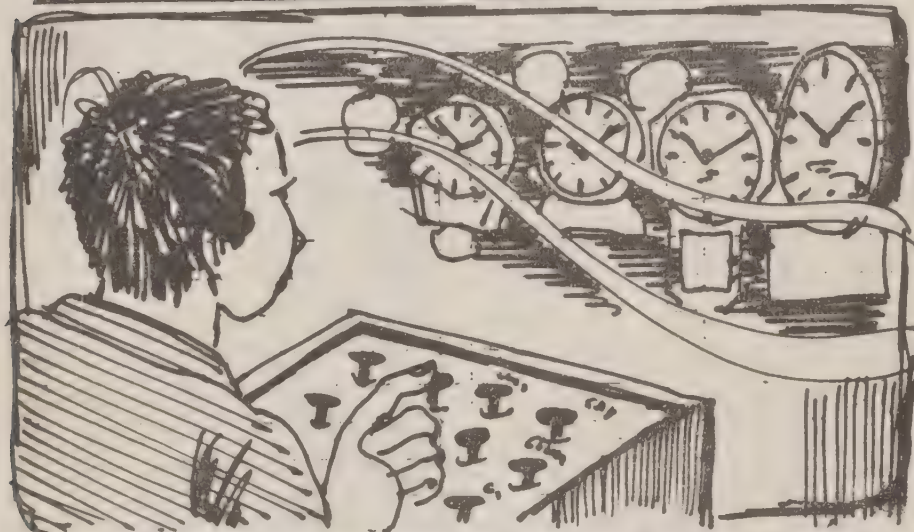
पुराना घंटा चिल्ला रहा था यही आवाज उन्होंने टेलीफोन पर सुनी थी.

महिला पीछे से भागती हुई कमरे में आई. ''हरी मेहरबानी करो, क्या . . . . .वह कहने लगी. फिर उसने तीनों जासूसों को देखा, ''ओह!'' वह घबरा कर बोली ''तुम इन्हें भीतर ले आये,तुम क्या कर रहे हो हरी ? तुम्हें यहां क्या चाहिए ?''

''इनके पास भी एक चिल्लाने वाली घड़ी है,'' हरी ने बिजली का तार खींचते हुए उत्तर दिया,''एक छोटी सी, मैने इसे पहले कभी नहीं देखा, परन्तु अवश्य ही यह भी मि० हरीश की ही होगी.''

उसने घड़ी मेज से उठा कर अपनी मां को दिखाई, उसने सिर हिलाया.

''नहीं, मैने भी इसे पहले कभी नहीं देखा, क्या तुम्हें यकीन है यह मि० हरीश की ही है ?'

''पक्का यकीन है मां,'' हरी बोला ''और कौन ऐसे हैं जो घड़ियों को चीखने वाली बनवाता है, ''नहीं, मेरे विचार से ऐसा कोई नहीं है, परन्तु इन लड़कों को यह कहां से मिली ?''

''मुझे नहीं मालूम अभी'', कुछ कुछ नाराजी से हरी ने उत्तर दिया, परन्तु हरी अब पहले जितना नाराज प्रतीत नहीं हो रहा था— ''यह लोग किसी किस्म के जासूस हैं और क्योंकि इनके पास मि० हरीश की ही एक घड़ी है, देखता हूं यह क्या चाहते हैं ?''

उसने एक दरवाजा खोल कर लड़कों को भीतर आने का इशारा किया, लड़के किताबों के लकड़ी के शैल्फों से भरी लाईब्रेरी के एक बड़े कमरे में पहुचे. लकड़ी लगी दिवारों पर कई खूबसूरत फ्रेमों जड़े तेलचित्र लगे थे और कमरे के दूसरे सिरे पर एक बहुत बड़ा शीशा लगा हुआ था जिसमें तेलचित्र प्रतिबिम्बित हो कर कमरे को बड़ा आकार दे रहे . किताबों के शेल्फ जमीन से लेकर छत तक लगे थे जिनमें सैकड़ों किताबों भरी थीं.

परन्तु सब से अधिक इनका ध्यान घड़ियों को ओर आकर्षित हो रहा था क्योंकि कमरे में एक दर्जन से भी अधिक घड़ियां थीं. जिनमें से कोई प्राचीन घड़ी के समान मेज और शैल्फों पर रखी थी और कुछ फर्श पर रखी थीं. सभी पुरानी और मूल्यवान दिखाई दे रही थीं. जाहिर था कि सभी बिजली से चल रही थीं क्योंकि वे टिक-किट न कर केवल घूं घूं सी आवाज कर रही थीं.

''तुम ये सब घड़ियां देख रहे हो ?'' हरी ने पूछा, ''अच्छा। मैं तुम्हें एक बात बताताहूं; यह सभी घड़ियां चिल्लाती हैं.''

घड़ियों का कमरा

कमरा चीखों से भरा था पहले एक बहुत तेज़ चीख सुनाई दी जैसे कोई बहुत डरा हुआ नन्हा बच्चा चीख रहा हो, फिर आवाज़ एक गुस्से से भरे व्यक्ति की चीख में बदल गई. फिर चीख बदल कर किसी जंगली खूंख्वार चीते की चीख हो उठी. फिर चारों ओर से चीखं-पुकार,जानवरों के गुर्राने और रम्भाने की अजीब-अजीब आवाजें आने लगीं , ऐसी डरावनी चीख-पुकार तीनों लड़कों में से किसी ने भी जीवन भर न सुनी थी. वह दीवान पर इस भयावने स्वर को सुन पसीने से लथपथ हो रहे थे.

हरी डैस्क पर बैठा स्विचों को खोल बन्द कर कमरे में उठे स्वरों का नियंत्रण कर रहा था. अब लड़को पर जाहिर हो चुका था कि कमरे में रखी हर घड़ी को चीखने के लिये बनवाया गया था शायद इनकी घड़ी में भी ऐसा ही यन्त्र लगा हुआ था और हरी बैठा इन सब घड़ियों को अभ्यस्त के समान एक साथ चीखवा रहा था.

वह इन लोगों की घबराहट तथा परेशानी को देख कर खुश हो रहा था और फिर उसने सारे स्विच बन्द कर कमरे को शांत कर दिया. मुझे पूर्ण विश्वास है तुमने कभी ऐसा कुछ नहीं देखा, यही कारण था कि तुम्हारी चिल्लाने वाली घड़ी का मुझ पर कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ था. मुझे तो चिल्लाने वाली घड़ियों की आदत है.

'क्या यह कमरा ध्वनि निरोधक बना हुआ है,राजू ने पूछा, 'यदि ऐसा नहीं है तो पड़ोसी पुलिस को अवश्य बुला चुके होंगे.''

हरी ने गर्व से कहा, 'बेशक कमरे को ध्वनि निरोधक किया हुआ है, यह मि. हरीश का चिल्लाने वाला कमरा है, वह रात को यहां बैठ कर सारी घड़ियों को चिल्लवाया करते थे, उन्होंने मुझे भी घड़ियों को चिलवाना अपने—जाने दो उन्होंने मुझे भी सिखा दिया था.

'क्या मि. हरीश को कुछ हो गया था ?'' राजू ने पूछा, 'नहीं, बिलकुल नहीं, उन्हें कुछ क्यों होता,'' हरी गुस्से से बोला.

'तुमने कहना आरम्भ किया था'' उन्होंने अपने 'और फिर तुम रुक गये थे,मैने सोचा तुम कहने वाले थे कि उन्हें कुछ हो गया था.''

'वे चले गये थे, केवल इतना ही, पर इससे तुम्हें क्या मतलब ?''

'हम एक चिल्लाने वाली घड़ी की खोज कर रहे हैं, और अब हम कमरा भरी चिल्लाने वाली घड़ियों तक पहुंच गये हैं, मुझे लगता है हमारे सामने एक बहुत बड़ा रहस्य है.''

आखिर कोई किस कारण ऐसा कमरा बनाता है जिसमें आदमियों और जानवरों के स्वरों में चिल्लाने वाली घड़ियाँ भरी पड़ी हों, इसका कुछ मतलब समझ सा नहीं आता।''

'मैं तुमसे डबल सहमत हूं'' महिन्दर बोला 'यह विचार उतना ही पागलपन भरा है जितना कोई भी और जीवन में आया विचार हो।''

'यह मि. हरीश का शौक था,'' हरी ने बचाव का रुख अपनाते हुए कहा, 'हर शौक का कोई मतलब होना ज़रूरी नहीं है. वे ऐसा शौक रखना चाहते थे जो किसी भी और व्यक्ति का न हो और उन्होंने चिल्लाने वाली घड़ियाँ एकत्रित करीं. तुम्हें किस चीज़ का शौक है'? उसने राज से आखिरी प्रश्न किया.

'रहस्यों का पता लगाना'' राजू ने उत्तर दिया। जैसे यह 'हो सकता है इसमें कोई रहस्य हो ही न परन्तु तुम्हें ही कुछ परेशान कर रहा हो, तुम्हारे व्यवहार से ऐसा लगता है जैसे तुम्हें सबसे नफरत हो. तुम हमें कुछ बताओ, हो सकता है, हम तुम्हारी कुछ मदद कर पायें।''

'तुम कैसे मदद करोगे?'' हरी गुस्से से बोला, 'मेरा मतलब मुझे कोई परेशानी नहीं है, केवल तुम लोग परेशान कर रहे हो, तुम लोग यहां से चले क्यों नहीं जाते, ताकि मैं अकेला बैठ सकूं.''

उसने भाग कर दरवाजा खोल दिया.

'यहां से बाहर निकल जाओ, और वापिस न आना. ओह!''— और अचानक वह चुप हो गया, सामने का दरवाजा खुल गया था और भारी भरकम आदमी भीतर आ रहा था. वह बहुत लम्बा न था परन्तु उसके कंधे बहुत चौड़े थे. उसने हरी की ओर देखा और फिर तीनों लड़कों को देख कर गुर्राया.

'हरी यह क्या है?'' तुमने अपने दोस्त घर में बुला लिये हैं ताकि घर में खेलकूद और शोर मचाओ. इससे मुझे बहुत परेशानी होती है, तुम्हें तो पता है मुझे घर में पूरी शांति अच्छी लगती है।'

'हम शोर नहीं मचा रहे, मि. जिटर, हरी ने उदास से स्वर में उत्तर दिया' और यह कमरा भी तो साउंडप्रूफ है।'

उस बड़े आदमी ने श्याम, महिन्दर और राजू पर एक गहरी दृष्टि डाली मानों उनके चेहरे याद रखने का प्रयास कर रहा हो'।

'मुझे तुम्हारी मां से ही कुछ बात करनी पड़ेगी, वह बोला और सीढ़ियों से ऊपर चला गया.

'इन्हें तुम्हारे अपने घर में मित्र बुलाने पर आपत्ति क्यों है,'' राजू ने आश्चर्य से पूछा. 'यह घर तो तुम्हारा है. क्यों है न?''

'नहीं। यह मि. हरीश का घर है, मेरी मां तोघर की देखभाल करती है, और ऊपर का हिस्सा हमने मि. जिटर को किराये पर दे रक्खा है ताकि घर का खर्च चलता रहे, अब तुम लोग चलते-फिरते नजर आओ, काफ़ी परेशानी खड़ी कर चुके हो।''

'ठीक है,'' राजू बोला 'चलो महिन्दर, श्याम चलें, दूसरी चिल्लाने वाली घड़ियां दिखाने के लिये धन्यवाद हरी.''

और वह आगे-आगे बड़े कमरे की ओर बढ़ चला जहां से उसने अपनी चिल्लाने वाली घड़ी उठा कर अपने थैले में डाल लीया फिर ये लोग बरखा सिंह द्वारा खड़ी की गई कार की ओर बढ़ चले।

'हम रहस्य का पता लगाने में कुछ बहुत आगे तो नहीं बढ़ पाये,'' महिन्दर कार में बैठते हुए बड़बड़ाया, 'मेरे ख्याल में यदि किसी का दिल करे तो वह चिल्लाने वाली घड़ियां एकत्रित कर सकता है, और यह तुम्हारी गुत्थी का अन्त है।'

'मेरे ख्याल में तुम्हारा विचार ठीक है,'' राजू सहमत होते हुए बोला, 'हम शहर की ओर आये हुए हैं. बरखासिंह से कहते हैं राणादे के दफ्तर के निकट रुके ताकि यदि हो सके तो उनसे भेंट कर हो सकता है उन्हें चिल्लाने वाली घडी में कुछ दिलचस्पी हो।''

'ठीक है राजू साहब,'' और बरखासिंह ने गाड़ी चालू की.

'एक क्षण रुको, बरखासिंह।'' अचानक श्याम बोला.

'हरीनाथ अपने घर की सड़क पर से भागता हुआ आ रहा था. महिन्दर ने खिड़की का शीशा उतारा और हरी एक दम उस पर तेज़ी से सांस लेता हुआ झुक गया.

'शुक्र है मैंने तुम्हें रोक लिया।' वह बोला 'मैंने फैसला कर लिया है, तुम जासूस हो और हो सकता है तुम मेरी सहायता कर सको, मेरे पिता बिना कसूर जेल में सज़ा पा रहे हैं. मैं चाहता हूं तुम लोग मेरी मदद कर उन्हें बेकसूर साबित करवा दो।''

अधिक गहरा रहस्य

'कार में बैठ कर हमें इस विषय में सब कुछ बताओ'' राजू ने कहा, 'तब हमें पता चलेगा कि हम मदद कर सकेंगे या नहीं.''

'हरी उनके साथ कार में फंस गया उसे अपनी कहानी बताने में अधिक समय नहीं

शेष पृष्ठ २८ पर

मदहोश
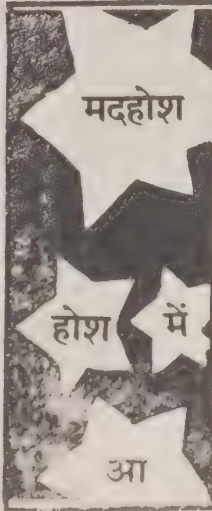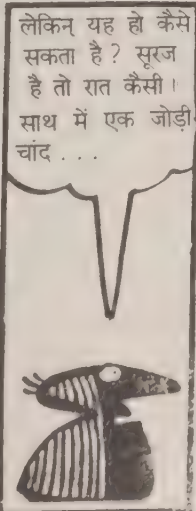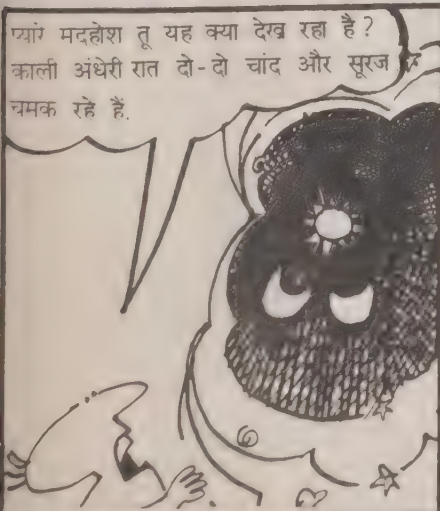
ऐशियाई खेलों की
दीवानी पब्लिसिटी
आजकल ऐशियाई खेलों के बारे में जो १९८२ में दिल्ली में होने वाले हैं विभिन्न माध्यमों से प्रचार किया जा रहा है ताकि जनता इन खेलों के बारे में जागरुक हो सके। विभिन्न वस्तुओं पर जंतरमंतर के डिजायन पर आधारित प्रतीक चिह्न तथा नाचते हाथी के बच्चे अप्पू का प्रयोग किया जा रहा है। यह सब पश्चिमी देशों से उधार लिये प्रचार के तरीके हैं। भारत की अपनी सभ्यता है और अपनी अलग परम्परायें और स्थितियां हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुये प्रचार के नये माध्यम अपनाये जा सकते हैं जो ज्यादा कारगर और रुचिकर सिद्ध होंगे। ऐसे ही कुछ दीवाने सुझाव पेश हैं।
घोड़े, भेड़, बकरियों के शरीर को दागने के लिये ऐशियाई खेल प्रतीक का प्रयोग हो। तांगे वालों और गडरियों व रेस हारने वालों को ऐशियाई खेलों का पता लगेगा।
ट्रकों के नीचे ऐशियाई खेलों का प्रतीक बनाया जाये। राजमार्गों पर प्रायः ट्रक उल्टे पड़े मिलते हैं। आते-जाते लोग उल्टे पड़े ट्रक पर नज़र ज़रूर डालते हैं। लगे हाथ ऐशियाई खेलों का प्रचार भी हो जायेगा।
बेलनों पर प्रतीक चिह्न का सांचा बना हो। चपातियां बनेंगी तो उन पर सिम्बल उभरा होगा। रोज़ खाना खाते समय पेट में उछल रहे चूहों को ऐशियाई खेलों की याद दिलाई जायेगी।
चेचक के टीके लगाने वाले गन में ऐसी डिजायनिंग हो कि टीके में अन्तरमंतर के प्रतीक का चिह्न उभर आये। टीके का दाग रह भी जायेगा तो उम्र भर याद रहेगा कि कभी दिल्ली में ऐशियाई खेल १९८२ में हुये थे।
१९८२ वर्ष में मौत की सज़ा फांसी पर लटका कर न की जाये। इसके स्थान पर हाथी के पैरों तले कुचलवाये जाने वाला पुराना तरीका अपनाया जाये। एक तो अप्पू का हाथी से नाता है, दूसरे हाथी के पैर के नीचे ऐशियाई खेलों का प्रतीक चिह्न बना हो ताकि मरने वालों को मरने से पहले इन खेलों के महत्व का आभास हो जाये।
खेलों का प्रतीक चिह्न सूर्य की बिन्दियां लगाने
फैशन चलाया जाये।
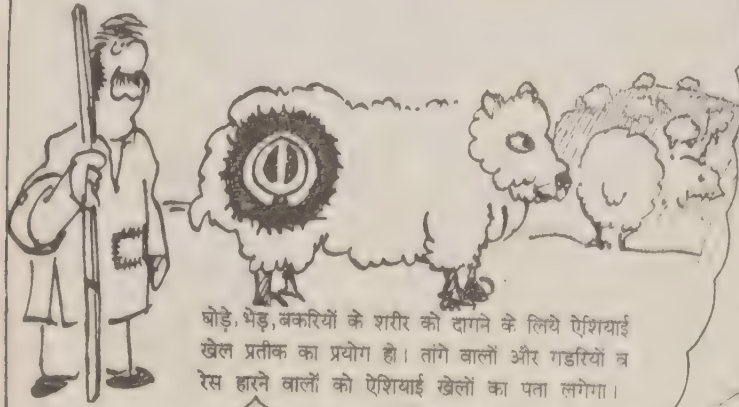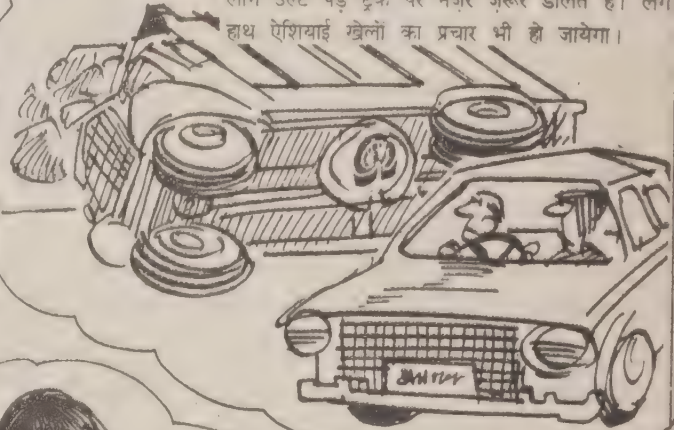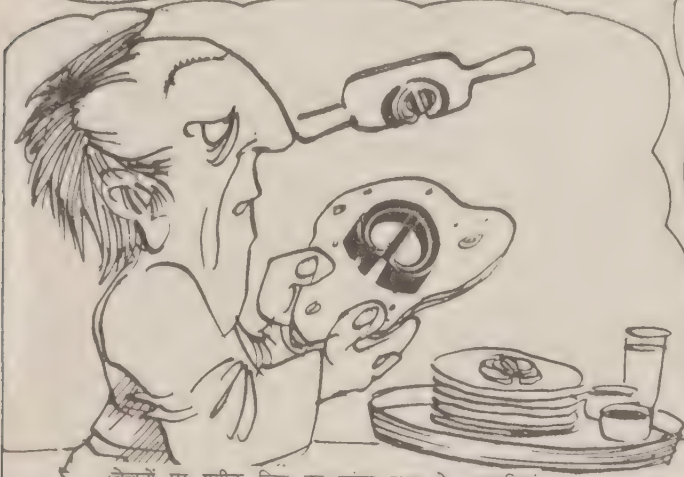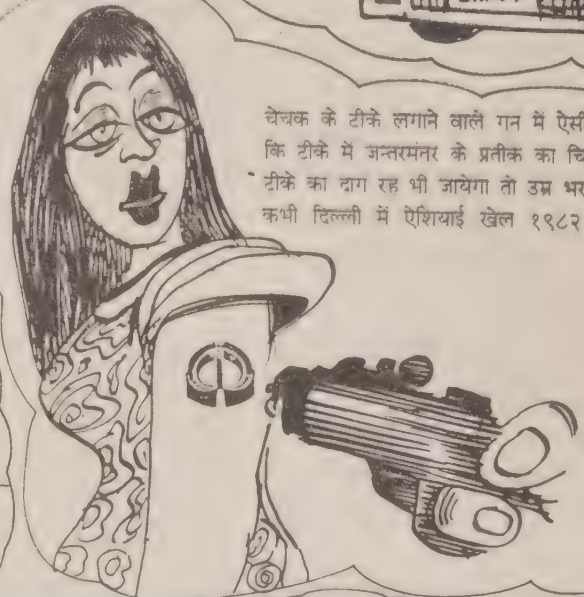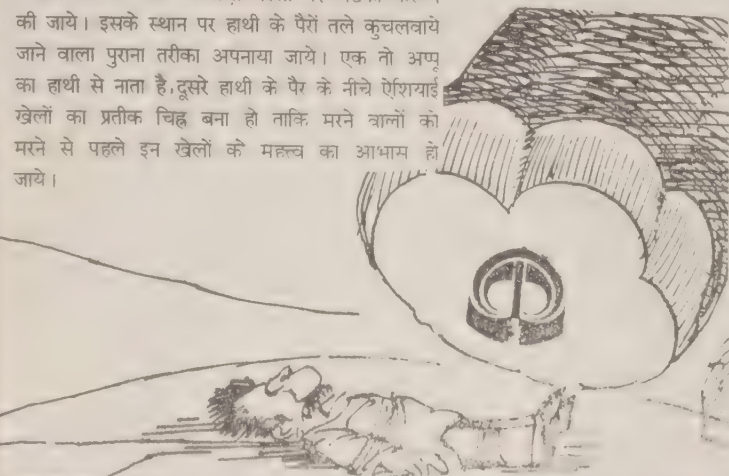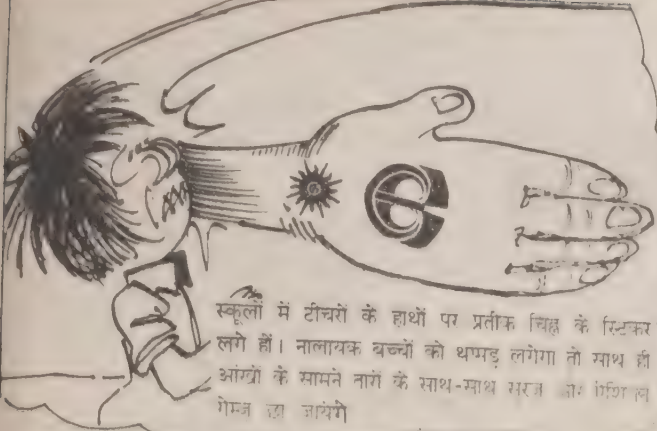
स्कूलों में टीचरों के हाथों पर प्रतीक चिह्न के स्टिकर लगे हों। नालायक बच्चों को थप्पड़ लगेगा तो साथ ही आंखों के सामने तारों के साथ-साथ
हलवाइयों को एशियाई खेल के प्रतीक की डिजायन की जलेबियां बनाने की ट्रेनिंग दी जाये। मिठाई खाने वालों को एशियाई खेलों की चाशनी का पता लग जायेगा।
हमारा देश धार्मिक प्रवृत्ति का है।
सिरदर्द की गोलियां जनरमंतर डिजायन के सांचे में बनें। जब भी सर दर्द होगा एशियाई खेलों की याद ताज़ा
महापुरुषों की समाधि पर विदेशी अतिथि
याई खेलों के प्रतीक चिह्न के
अर्पित करें।
धोबियों के गधों की पिछली टांगों के खुरों पर प्रतीक चिह्न के आकार के नाल लगाये जायें। जब गधा दुलत्ती झाड़ेगा तो धोबी राजा को भी पता लगेगा कि ऐशियाई खेल केवल धोती फाड़ कर रुमाल बनाने का नाम नहीं है।
जो आदमी घर बना रहा है और खिड़की प्रतीक चिह्न के डिजायन की बनायेगा उसे सीमेंट जल्दी एलॉट किया जायेगा। इन खिड़कियों से लड़की प्रेमी से आंखें लड़ायेंगी तो प्रेमी के दिल दिमाग में ऐशियाई खेलों का
चिह्न बस जायेगा।
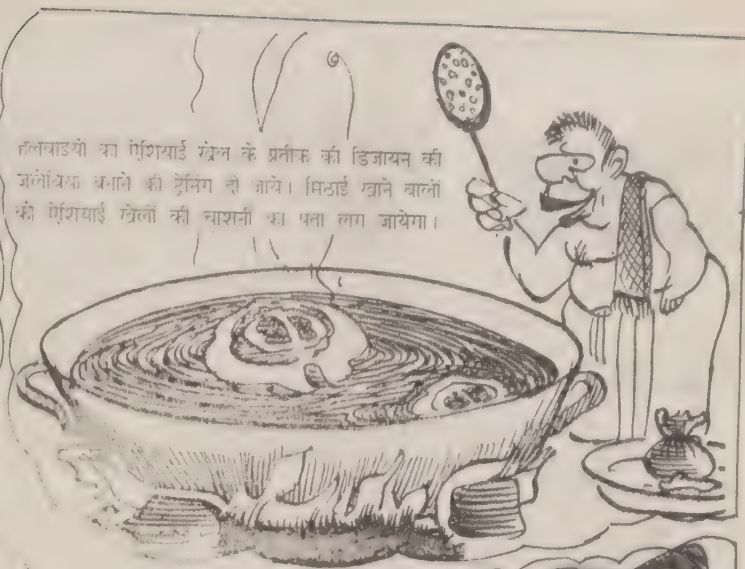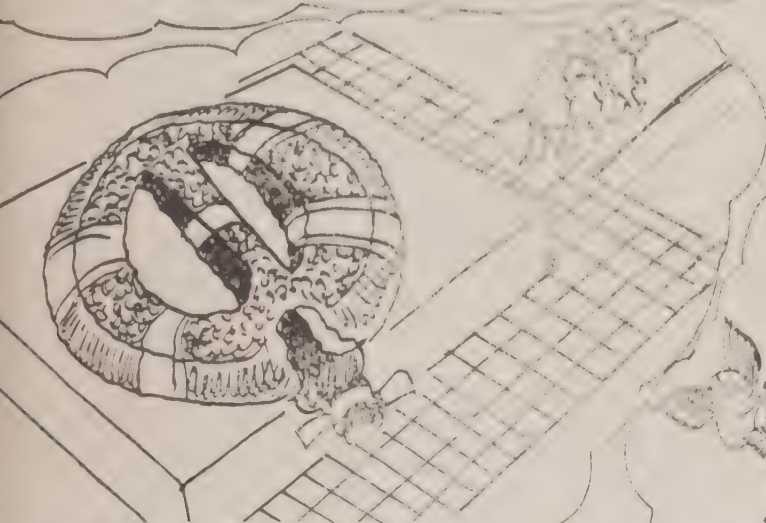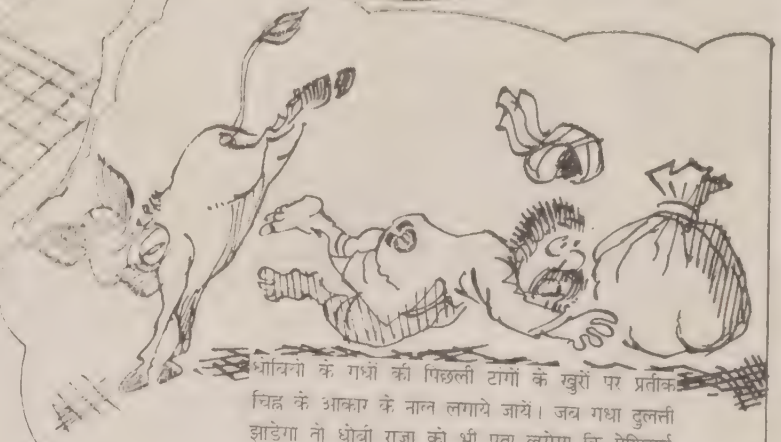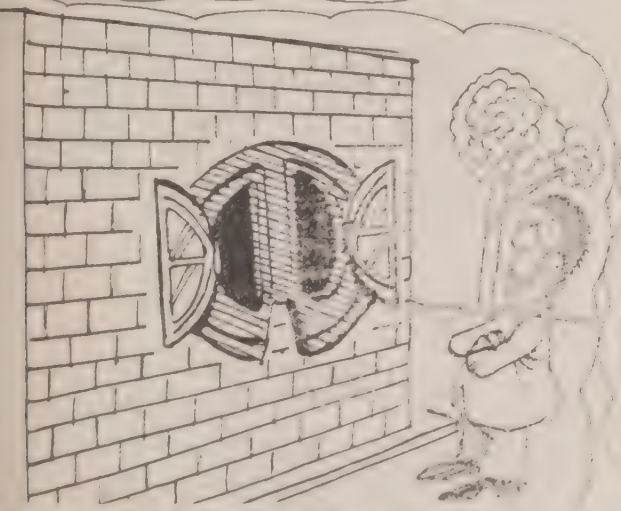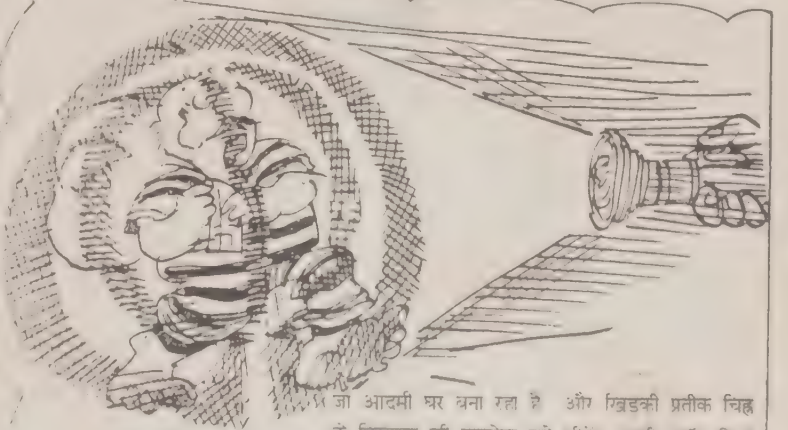
भारत-इंगलैंड
६ टैस्ट मैचों की १९८१-८२ श्रृंखला के आंकड़े

भारत बल्लेबाजी

	मैच	पारियां	नॉट आऊट	उच्चतम स्कोर	रन	औसत
यशपाल शर्मा	२	३	१	१४०	२२०	११०.००
सुनील गावस्कर	६	९	१	१७२	५००	६२.५०
गुंडप्पा विश्वनाथ	६	८	०	२२२	४६६	५८.२५
कपिल देव	६	८	२	११६	३१८	५८.००
दिलीप वैंगसरकार	६	८	१	७१	२९२	४१.७१
प्रणब राय	२	३	१	६०	७१	३५.५०
रवि शास्त्री	६	६	१	९३	१४०	२८.००
मदनलाल	५	५	२	४४	६९	२३.००
के. श्रीकान्त	४	६	०	६५	११९	१९.८३
सय्यद किरमानी	५	६	१	६७	९९	१९.८०
संदीप पाटिल	४	६	१	३१	९५	१९.००
कीर्ति आज़ाद	३	४	०	३४	७१	१७.७५
अशोक मलहोत्रा	२	२	०	३१	३१	१५.५०
दिलीप दोषी	५	५	२	७	१४	४.६६
शिवलाल यादव	१	१	१	५	५	५

गेंदबाज़ी

	ओवर	मेडन	रन	विकेट	सर्वश्रेष्ठ-प्रदर्शन	औसत
दिलीप दोषी	२६७.५	१०३	४६८	२२	५-३९	२१.२७
मदन लाल	१५९	३४	४३२	१४	५-२३	३०.८५
कपिल देव	२४३.५	४०	८३५	२२	६-९१	३७.९५
रवि शास्त्री	२८८.००	७३	४६२	१२	४-८३	३८.५०

इंगलैंड बल्लेबाजी

	मैच	पारियां	नॉट आऊट	उच्चतम स्कोर	रन	औसत
ईयान बॉथम	६	८	०	१४२	४४६	५५.००
ग्राहम गूच	६	१०	१	१२७	४८७	५४.११
डेविड गोवर	६	९	१	८५	३७५	४६.८७
ज्यॉफ बायकॉट	४	८	१	१५०	३१२	४४.५७
क्रिस तावरे	६	९	०	१४९	३४९	३८.७७
कीथ फ्लैचर	६	९	२	६९	२५२	३६.००
ग्राहम डिली	४	५	०	५२	७०	१४.००
माइक गैटिंग	५	६	१	३२	६८	१३.६०
बॉब विलिस	५	४	२	१३	२६	१३.००

चना कुरमुरा

कमांडिग अफसर ने नये भर्ती हुए जवान से सामने खड़ी कतार के पीछे जा कर खड़े होने का आदेश दिया. कुछ ही देर बाद उसी जवान को अपने निकट खड़ा देख अफसर ने उससे पूछा—

अफसर—''तुम्हें कतार के पीछे जा कर खड़े होने को कहा था, तुम यहां क्या कर रहे हो ?''

जवान—''साहब ! हम वहीं खड़े होने गये थे, परन्तु वहां पहले से ही कोई खड़ा है।

●

एक सज्जन सिगनल बत्तियों के निकट खड़े काफ़ी देर से कार चलाने का प्रयास कर रहे थे। सिगनल की बत्तियां एक बार लाल, पीली, हरी हुईं वे न चले, बत्तियां दूसरी बार फिर लाल, पीली, और हरी हुईं और वे फिर भी आगे न बढ़े। तीसरी बार भी जब बत्तियों के रंग बदलने पर भी वे आगे न बढ़े तो सामने खड़े पुलिस मैन ने उनसे आ कर पूछा—क्या आपकी पसन्द का कोई भी रंग हमारे पास नहीं है।

●

पुलिस अफसर—क्षमा कीजिये श्रीमती जी इस तलाब में तैरने की अनुमति नहीं है। महिला ने झुंझला कर पूछा, यह आपने मुझे कपड़े उतारने के पहले क्यों नहीं बताया था। ''क्योंकि कपड़े उतारने के खिलाफ कोई कानून नहीं है,'' अफसर न साधारण रुप से उत्तर दिया।

●

बुडापेस्ट में खडी एक कार की दो अजनबी सराहना कर रहे थे

''कितनी सुन्दर है'' एक बोला, 'रूसियों को वाकई सुन्दर कार बनानी आती है''

'यह रूसी नहीं है'' दूसरे ने उसकी गलती ठीक करते हुए कहा ''क्या तुम अमरीकन कार को देखते ही पहिचान नहीं लेते ?

''अवश्य'' पहले ने उत्तर दिया ''परन्तु मैं तुम्हें नहीं पहिचानता।''

●

''ऐमिली'', पति ने पैड पर पेन हाथ में लिये हुए पूछा, ''उस होटल का क्या नाम था जिसमें हम न्यू ओरलियनस में ठहरे थे ?''

''प्रिय एक क्षण ठहरो'' पत्नि ने उत्तर दिया, ''मुझे अपने तौलियों को देखना पड़ेगा।''

डाक्टरों का कहना है कि कड़ुवा बोलने पर दिमाग का तनाव दूर हो जाता है। गाली देने से दिल का बोझ हल्का होता है। दिमाग में बारुद इकट्ठा नहीं होता। लेकिन गाली देने से तो झगड़ा हो सकता है, सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं। हम आपको ऐसे सिचुयेशन तैयार करके दे रहे हैं जिनमें आप गाली दे दिल की भड़ास भी निकाल सकते हैं और हानि भी नहीं होगी। सांप भी मरेगा लाठी भी नहीं टूटेगी।
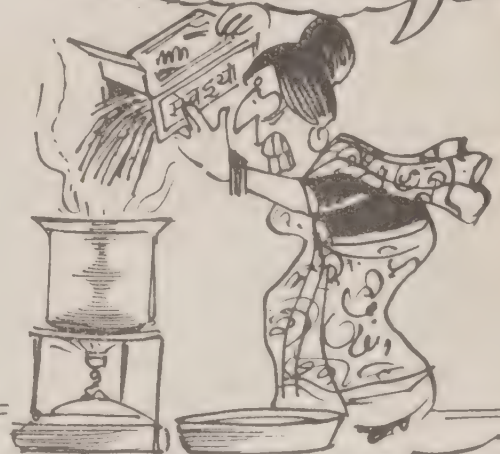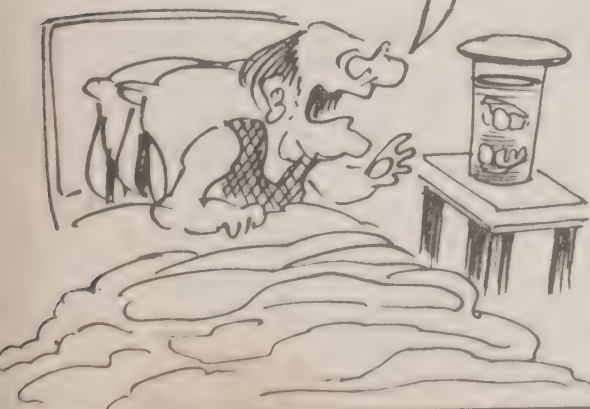
प्र. क्या हमारी आंख से शरीर के रोगों की सूचना मिलती है?

शरीर की खिड़की 'आंख'

हमारी आंख हमारे शरीर की रक्त शिराओं तथा स्नायु तंत्रिकाओं में एक खिड़की के समानं है जिससे झांक कर हमारे पूरे शरीर के विषय में अनिवार्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

आंख की जांच बाहर से आरम्भ हो कर भीतर को जाती है, सबसे पहले आंखों के डाक्टर नज़र की जांच करते हैं इसके लिये दीवार पर लगे चार्ट की सहायता लेते हैं इसके पश्चात नज़र का क्षेत्र निर्धारित करते हैं इस का पता लगाने के लिये डाक्टर वस्तुओं को क्षेत्र की सीमा पर भीतर बाहर करते हैं। नज़र का क्षेत्र छोटा होने के कारणों में मुख्य है आंख के भीतर अधिक दबाव जो ग्लूकोमा या रसौली के आंख की नस पर दबाव से होता है. डाक्टर आंखों में किसी भी प्रकार की छूत का भी पता लगाते हैं पलकों के चारों तरफ़ किसी प्रकार का छूत का रोग तो नहीं है इसके साथ-साथ पलक के बालों की भी जांच की जाती है साथ ही डाक्टर इस बात का भी ध्यान देते हैं कि पलक आंख का नीचे कितनी बार पीछा करती है या पलक कितनी बार बंद होती है। पलक का कम झपकना कई बार थाईरोइड रोग का सूचक होता है।

यदि आंख की एक पुतली सिकुड़ती है तथा दूसरी नहीं सिकुड़ती तो भी डाक्टर को चेतावनी मिलती है कि कुछ न कुछ—रसौली या रक्ताघात से आंख और मस्तिष्क के बीच की नस को नुकसान पहुंचा है। फेफड़े तक की दूरी में रसौली होने पर गले के चारों ओर घेरा डालने वाली नस को हानि पहुंच सकती है।

आंख का सफ़ेद भाग, आंसू ग्रन्थि, कोरनिया, आंख की पुतली लैंस तथा आंख के परदे की जांच किसी भी परेशानी का पता लगाने के लिये की जाती है। बहुत से सफेद अणुओं से सूजन का आभास होता है, रक्त का अर्थ है कहीं पर मांस पेशियां फट गई हैं या कोई इक्त शिरा फट गई है, आंख में ढ़ीड़ का आना आंख की तकलीफ का सूचक है।

आंख का परदा लाल हो जाना बहुत से रोगों का पता लगाने की सूचना देता है रक्तचाप बढ़ जाने से रक्तशिराओं के जोड़ो पर से शिराओं का टूट जाना इस रोग की जानकारी देता है. शिराओं का आवश्यकता से अधिक बढना मधुमेह रोग का पता बताता है, इसी प्रकार शिराओं का सिकुड़ जाना शिराओं के सख्त पड़ जाने का सूचक है तथा नन्हीं रक्त शिराओं को नुकसान पहुंचने का कारण डायबटीज के आरम्भिक लक्षण बताता है। डाक्टर आंख के पीछे के पिन के सिर जितने छोटे छेद की भी जांच करते हैं इस छेद से हो कर हजारो लाखों बारीक नसें ओपटिक नस के भीतर से मस्तिष्क को जाती हैं। यदि इन नसों में कोई अस्वभाविकता का पता चलता है और नसों के रेशों को हानि पहुंची होती है तो इससे आंख पर दबाव की सूचना प्राप्त होती है जो ग्लूकोमा या टयूमर के कारण हो सकती है। जब डाक्टर को शरीर के विषय में तेज़ और ठीक जानकारी की आवश्यकता होती है तो आंख के पास ही इसका उत्तर मिलता है।

आंख की रक्तशिराओं में दौड़ते रक्त की शअ-शअ ध्वनि सुन कर रक्ताघात होनेकी चेतावनी डाक्टर को मिल सकती है।

प्र. क्या हम प्रकाश किरण को पकड़ सकते हैं?

उ. प्रकाश हंमारी पकड़ से बाहर प्रतीत होता है परन्तु क्या किसी दिन भविष्य में इसे इतना ठंडा किया जा सकेगा कि इसकी गति धीमी पड़ जाये।

केलिफोर्निया विश्वविद्यालय सान्ताक्रुज के दो भौतिज्ञों का मत है कि ऐसे बदलाव की सम्भावना है। आधुनिक भौतिकी तथा रोजमर्रा के अनुभव के अनुसार प्रकाश अणु फोटोन्स में कोई तत्व नहीं है। परन्तु भौतिज्ञ जोल प्रीमेक और मेर शेर का सुझाव है कि हो सकता है अधिक ठंडा हो जाने पर फोटोन्स तत्व ग्रहण कर ले, इस से इनकी गति धीमी पड़ जायेगी तथा फिर इनका विश्लेषण करना भी अधिक सरल होगा.

तत्वहीन अवस्था से तत्व अवस्था में बदलने पर भौतिकी के नये नियम बनाने पड़ेंगे. तथा वायुमण्डल के अन्त के बारे में भी वैज्ञानिको को अपने विचार बदलने पड़ेंगे। सबसे अद्‌भुत बात बदलाव की प्रयोगशाला में हर तत्वहीन पदार्थ के तत्व ग्रहण करने की होगी, इससे ही पृथ्वी के आरम्भ में हर वस्तु के तत्वग्रहण करने का भी पता चल सकेगा।

वैज्ञानिकों का विश्वास है कि प्रारम्भिक अणुओं जिन से किसी से भी तत्व ग्रहण किया गया था एक ही समय एकसैकिण्ड के १० करोड़ के १० वें भाग में ही हो गया था जब संसार की रचना हुई थी—समझा जाता है उसी समय फोटोन जैसे ही एक और तत्व बोसोन ने भी तत्व ग्रहण किया था. प्रीमेक तथा शेर का अनुमान है फोटोन भी ऐसे ही तत्व ग्रहण कर लेगा। जब ब्रह्मांड की रचना हुई थी तब तापमान— हजार सौ शंख शंख केलविन पर था और तब फोटोन जैसा ही बोसोन भी तत्वहीन था, परन्तु एक क्षण के बहुत ही छोटे भाग में ही पृथ्वी का तापमान घट कर कुछ हजार अरब केलविन हो गया और दुर्बल बोसोन ने भी अन्य प्रारम्भिक अणुओं के साथ तत्व ग्रहण कर लिया था

जैसे-जैसे ब्रह्मांड का तापमान घटता जा रहा है प्रीमेक और शेर का विचार है कि हो सकता है कि तापमान घट कर इतना हो जाये कि फोटोन भी तत्व ग्रहण कर ले। परन्तु ब्रह्मांड इतना धीरे-धीरे ठंडा हो रहा है कि इसके १ डिग्री केलविन ठंडा होने में ५० से सौ अरब वर्ष लगें (एक केलविन पूर्ण शून्य से अधिक जो ४६० डिग्री शून्य से नीचे होता है (फेरनहाईट नाप पर)) परन्तु आधुनिक प्रयोगशाला में एक डिग्री केलविन के कुछ हजारवें तापमान पर पहुंचा जा सकता है।

इस को ध्यान में रख कर ही प्रीमेक तथा शेर ने एक साधारण प्रयोग करने का आह्वान किया है। यह प्रयोग इस बात पर आधारित है कि एक खुली जगह में फोटोन सब के सब एक ही फ्रीक्वैंसी तथा वेवलेन्थ पर हिलते हैं इसमें अन्तर केवल खुली जगह के अन्तर से ही आता है। यदि फोटोन तत्व ग्रहण कर लें तो उनकी वेवलेन्थ तो नहीं बदलेगी परन्तु उनकी फ्रीक्वन्सी बढ़ने की आशा है।

प्रीमेक तथा शेर का मत है कि फोटोन का तत्व ग्रहण कर लेना कोई निश्चित सम्भावना नहीं है फिर भी उनका विचार है यह प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिये, चाहे इसका रचनात्मक परिणाम क्षणिक ही हो। यदि यह प्रयोग कभी हो सका तो हम अवश्य ही प्रकाश किरण को पकड़ सकेंगे।
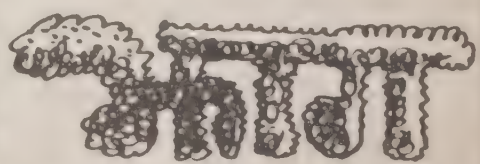
क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

हाऊसफुल

की तख्ती के विभिन्न दूसरे उपयोग

दूसरों का दुखड़ा सुनते-सुनते आपकी आंखें भर आती हैं तो पलकों से हाऊस फुल की छोटी-सी तख्ती लटका लें। अब और सुनने का ताव नहीं रहा।
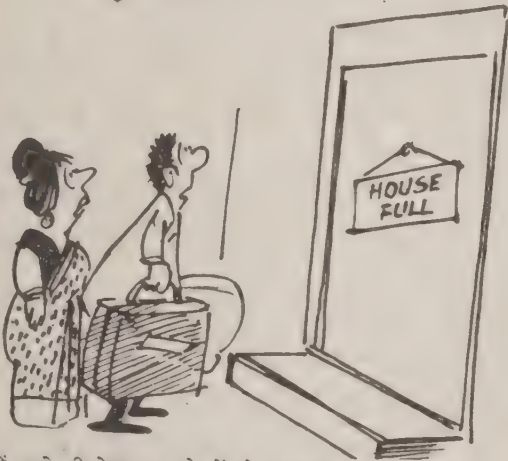
घर में पहले ही मेहमान भरे हों तो दरवाजे पर हाऊस फुल का बोर्ड लगा लें। दूसरे मेहमान दरवाजे पर से ही लौट कर अपना दूसरा बन्दोबस्त कर लेंगे।

घर में नौकरों की भी आफत रहती है। एक साथ घर के तीन-चार सदस्य अपना-अपना काम बताते हैं। वह किस-किसका काम करे। ऐसा किया जाये कि जब वह एक काम कर रहा हो तो हाथों से हाऊस फुल की तख्ती लटका ले ताकि दूसरे उसे काम तब तक न बतायें जब तक तख्ती उतर नहीं जाती।

पीने वाले पीते ही जाते हैं उन्हें पता ही नहीं लगता कि कब बस करना है। ऐसे लोगों के लिए यांत्रिक हाऊस फुल गैजेट बने। इसे पहन पियो जब श्वास में निश्चित मात्रा में अल्कोहल आने लगे तो लाल अक्षरों में हाऊस फुल डायल चमक उठे।
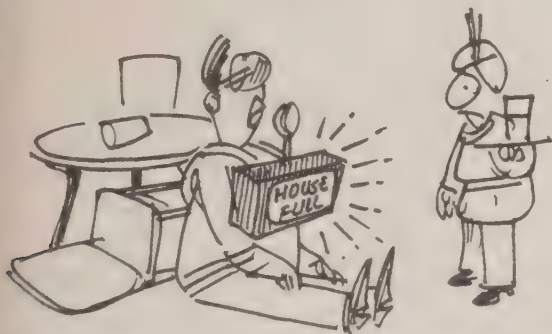
अपने कवि मित्र अधिक हों और एक की कवितायें सुन आपका दिमाग बोरियत से भर गया हो तो सिर पर हाऊस फुल का मुकुट पहन लें। दूसरा कवि मित्र मिले तो अपनी कवितायें वह उस दिन न सुनाये।

प्रेमी या प्रेमिकायें किसी एक के हो जायें तो दिल के पास हाऊस फुल का कार्ड लगा लें। कोई दूसरा या दूसरी घास डालने में अपना समय नष्ट न करे।

बीवी की शिकायत सुनते-सुनते आपके कान भर गए हों तो कानों से हाऊस फुल की तख्ती लटका लें। वह बाकी शिकायतें किसी दूसरे दिन सुनायें।

पंडित जी जीम करआरहे हों तो पेट पर हाऊस फुल का नोटिस लगा लें। ताकि उस समय कोई दूसरा यजमान उन्हें न्यौता न दे।

पंडित मेवालाल परदेशी, महोबा : आपकी अन्तिम आरज़ू क्या है?
उः अन्तिम समय तक आपका मनोरंजन किये जाना.
चन्द्रशेखर गोस्वामी, हरिद्वार : चाचा जी, मेरी पत्नी मरते समय कह गई थी कि दूसरा विवाह हरगिज़ न करना नहीं तो भूत बन कर तुम्हारे चिपट जाऊंगी. क्या यह बात सही है?
उ : आप यह प्रश्न उस से पूछ रहे हैं, जिस से एक आत्मा मरने से पहले भूत बन कर चिपटी हुई है?
रवि भाटिया, शंकर रोड : प्रेमिका के साथ बाग में बैठे हों और उस का बाप आ जाये तो?
उ० : हनुमान चालीसा का यह जाप करना चाहिएः

भूत परेत निकट नहीं आवे,
हनुमान जब नाम सुनावे.

फिर भी हालत बिगड़ती नज़र आये तो यह गाना गुनगुनाना चाहिए.

फूल गेंदवा ना मार,
लागत कलेजवा पे चोट.

ओम प्रकाश भाटिया, पहाड़ी धीरजः दुनिया में सब से अमीर कौन है?
उत्तरः कैलकुलेटर.
रवि भाटिया, शंकर मार्किटः चाचा जी, जिंदगी क्या है?
उ.: हंसते-हंसते कभी रो देने का रुलवाने का,
जिन्दगी काहे को है ख़्वाब है दीवाने का.
रामशरण ठाकुर, विलासपुरः चाचा जी, मैं जीनत अमान से शादी करना चाहता हूं. क्या वह मुझ से शादी करने को तैयार हो जाए-गी?
उ.: इस प्रश्न का उत्तर तो जीनत अमान ही दे सकती है, सर पर कफ़न बांध कर और सेहरा पहन कर उसके घर पहुंच जाईये.

विनोद पुरी, अशोक पुरी, सुशील पुरी, लुधियानाः बिजली के झटके और प्यार के झटके में क्या अंतर है?
उ.: एक ए. सी. का झटका है, जो परे फेंकता है, और दूसरा डी. सी. का झटका है, जो चिपट जाता है.
प्रेम बाबू शर्मा, दिल्लीः डीयर अंकल, सिगरेट की डिब्बी पर लिखा होता है, "सि-गरेट पीना स्वास्थ के लिये हानिकारक है." फिर भी लोग सिगरेट क्यों पीते हैं?
उ.: क्योंकि लोग हर वह काम करना अपनी शान समझते हैं, जिस के लिये मना किया जाये. आप किसी दीवार पर लिख दीजिये, "यहां इश्तेहार चिपकाना मना है." अगले रोज़ आप को उस दीवार पर इश्तेहार ही इश्तेहार चिपके पायेंगे.
प्रिन्स, पाटन, नेपालः मौसम नहीं बरसात का आंखें बरस रही हैं, जी भर के देख लूं तुझे आंखें तरस रही है.
उ.: इस चक्कर में बेचारे सर की शामत आ जायेगी. किया धरा आंखों का होगा और पत्थर पड़ेंगे सर पर.
केवल प्रकाश दुआ, काशीपुरः मरने के बाद क्या ग़मों से छुटकारा मिल जाता है?
उ.: ज़िन्दगी के ग़मों से हो जाता है. पर मरने के बाद वाले ग़म दुगने हो जाते हैं. जैसे एक शायर को यह ग़म सतायेगा कि उसकी यह बात किसी ने नहीं मानी जिस में उसने कहा थाः
दफ़न करना मेरी मईयत इसी मैखाने में,
ताके मैखाने की मिट्टी रहे मैख़ाने में.
सीतल दास, अमरावतीः चाचा जी, फिल्म अभिनेता अमजद खां क्या आप के भाई हैं?
उ.: आप जैसे दीवाने भतीजे हैं.
मुकेश कुमार गुप्ता, खुरजाः चाचा जी, मेरा छोटा भाई भी आप की तरह बातूनी है. क्या आप उसके साथ कम्पीटीशन को तैयार है.
उ. : आप का कोई 'एनलार्जमैंट' हो तो बात कीजिये, छोटे 'पाकिट बुक एडीशन' से हमारा क्या मुकाबला.
अशोक कुमार, दीवाना, रेवाड़ीः शादी कर के आप दोनों में से घाटा किसे रहा है? आप को या चाची को.

उ.: हमें ही रहा है. श्रीमती जी छुरी हैं और हम ख़रबूजा. इस में मुसीबत ख़रबूज़े पर ही आती है. चाहे ख़रबूज़ा छुरी पर गिरे. या छुरी ख़रबूज़े पर.
लखमीचन्द माधवानी, मैहरः क्या आप को भी घसीटा राम की तरह बीस साल का तजुर्बा है प्रश्नों के उत्तर देने का?
उ.: २६ साल का तजुर्बा है आप के पत्रों की बोरियां समेटने का.
श्याम, 'ज़ख़्मी', बम्हनी बंजरः प्यार किस काम आता है?
उ.: पहले आग लगाने के और फिर आंसुओं के फायर ब्रिगेड से आग बुझाने के.
संजय त्यागी, देहरादूनः डीयर चाचा जी, आप की उठी हुई एक उंगली का मतलब क्या है?
उ.: यही कि. आप ने अपने कनस्तर में से हमें सीधी उंगली से घी नहीं निकालने दिया तो हम टेढ़ी उंगली से निकाल लेंगे.
रविन्द्र नाथ सरीन, लुधियानाः इन्सान सब से ज्यादा खुशी और दुखी कब होता है?
उ.: जब वह अख़बार में अपने लाटरी के टिकट का नम्बर देखना शुरू करता है और देख चुकता है.
राजेश जैन मेरठः शाहजहां ने मुमताज़ की याद में ताजमहल बनवाया था, आप चाची की याद में क्या बनवायेंगे?
उ. : हम बेचारे क्या बनवा पायेंगे उन की याद में. हां, इतना ज़रूर कर देंगे कि कोई शाहजहां मिल गया तो आप की चाची उस उसे सौंप देंगे.
अब्दुल कलाम, चाचा जी, मैं दीवाना में अपने प्रश्न का उत्तर और फ्रैंडस क्लब में अपना फोटो देख कर फूला नहीं समाया. किन शब्दों में आप को धन्यवाद दूं?
उ.: आपने अपना पूरा पता नहीं दिया, वर्ना हम आप को शब्दकोष भेज देते कोई अच्छा सा शब्द छांटने के लिये.

आपस कीं बातें
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सिलबिल पिलपिल
जीवन का गूढ़ रहस्य
भाई जी कई हफ्तों से मेरे दिमाग में एक अजीब सा तनाव है। रह-रह कर दिल में कई प्रकार के सवाल उठते रहते हैं। हमारी जिन्दगी क्या है? हमारे पैदा होने का मकसद क्या है? क्या जासूसी गुत्थियां सुलझाना ही जीवन है? गांव से फसल के पैसे मंगवा कर बैठे-बैठे खाते रहो? हमने अपनी जिन्दगी में क्या किया?
यह सवाल तो बहुत पेचीदा है। जीवन की निरर्थकता को कैसे अर्थ दिया जाये . . .पैदा करने वालों ने हमसे क्या चाहा था, क्या हम उसे पूरा कर पाये? यही सोचते-सोचते लोग आगरा पागलखाने पहुंच गये।

चूं चूं बाबा
आज लोगों के जीवन में तनाव व दुख इसीलिये भर गये हैं कि हम प्रकृति से बहुत दूर चले गये हैं और एक नकली जिन्दगी बसर कर रहे हैं। प्लास्टिक के डिब्बों में हमारी आत्मा कैद हो गयी है। सारी मानव जाति सत्ता और धन के भंवर में फंस गई है। चारों तरफ सीमेंट के जंगल खड़े हैं। सड़कें रोड़ी से ढकी हैं। जमीन आस्ट्रोटर्फ के नीचे दुबक गई है। इंसान ने वैज्ञानिक तरक्की के नाम पर अपना नाता धरती से तोड़ दिया है। धरती की सौंधी-सौधी खुश्बू हम कैमिकल लेबोरेट्री में ढूंढ़ रहे हैं। पेड़ों की हरियाली हम नोटों में ढूंढ़ रहे हैं।

चूंचूं बाबा के वचन सुन कर मेरे मस्तिष्क के बंद पड़े कपाट भड़ से खुल गये हैं। कपाट खुलने की आवाज थम तक भी पहुंची होगी और गौर से देखो तो थम को मेरे माथे के भीतर का भेजा भी नज़र आ रहा होगा। आज इसे खुली हवा का ताजा झौंका खाने दो।
खट
पट!
भाई जी सहर में आकर हमने अपनी जिन्दगी तबाह कर दी। रेडियो, टी वी, फ्रिज, डी. डी. ए के फ्लैट और दीवाना वालों के चक्कर में आकर चौरासी लाख जन्मों के बाद मिला यह मानव जीवन हमने व्यर्थ गवां दिया। सोने और चांदी के वर्कों को कबाड़ी वालों के हाथ रद्दी अखबार के मोल बेच दिया।

यह हमारा आखिरी फैसला है। अब हम हमेशा-हमेशा के लिये वापिस अपने गांव चले जायेंगे। हमसे यह ऐसी भूल कैसे हो गयी? हम क्यों भूल गये कि हम धरती मां के जाये किसान बेटे हैं। मिट्टी से हमारा जन्म-जन्म का नाता है। हरी लहलहाती फसल और हरे-भरे पेड़ ही हमारे मन्दिर हैं। गाय, भैंस, बैल, बकरी, सअर भेड़, बत्तख और मुर्गी ही म्हारे जीवन के सच्चे साथी थे। आह ऽऽऽऽऽ हम जिन्दगी की राहों में भटक कर सीमेंट और पत्थरों के शहर में कहां फंस गये थे। अपने सीधे-सादे ग्रामीण जीवन रूपी सुगंधित फूल का सौदा हमने शहर में बने कागज के फूलों से कर दिया। हम कल ही गांव लौट चलेंगे।
अब जादा गम मत करो। सुबह का भूला शाम को घर आ जाये तो उसे भूला नहीं कहते।
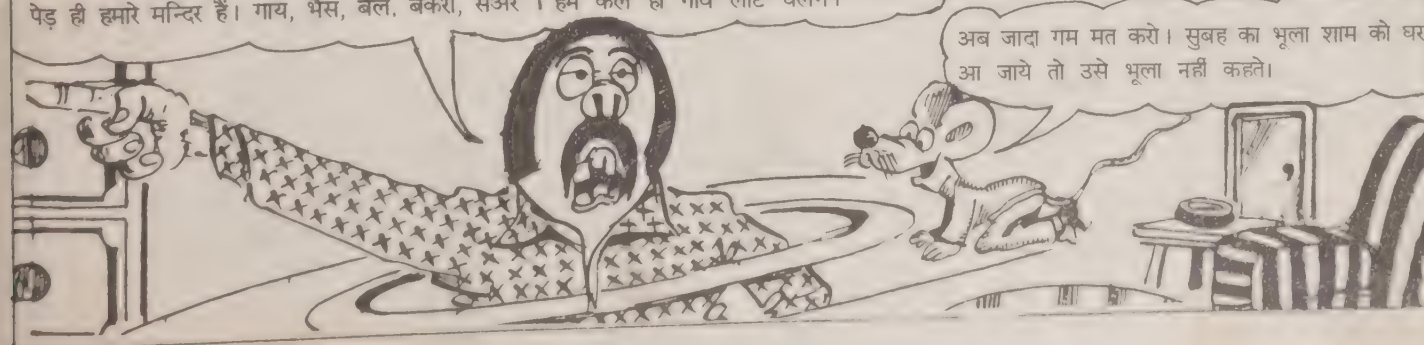
अपनी गांव की जमीन के निकट आते ही ऐसा लगा जैसे सदियों से बिछुड़ा बेटा अपनी मां की गोद के निकट पहुंच गया है। एक मुट्ठी इस प्यारी धरती को उठा कर अपने माथे से लगाऊंगा।
बिच्छू ने
काटा!
सच कहते हैं आजकल भाई-भाई को काट खाता है
एंह
थका दिया उस सांड के बच्चे ने। बड़ी मुश्किल से उससे पीछा छूटा।
साथ-ही-साथ हमारे सूटकेसों का भी हमसे पीछा छूटा। हम बहुत साल शहर में रहे हैं न इस लिये अपने गाव का बैल हमें नहीं पहचान पाया।
गांव की हवा देखो कितनी ताजी है। क्षणभर में थकान मिटा देती है यह । अमृत का काम करती है यह। बस नथुने फुला कर एक जोर की सास लो, सूंSSSSSS
यह चक्कर कैसे आ रहे हैं
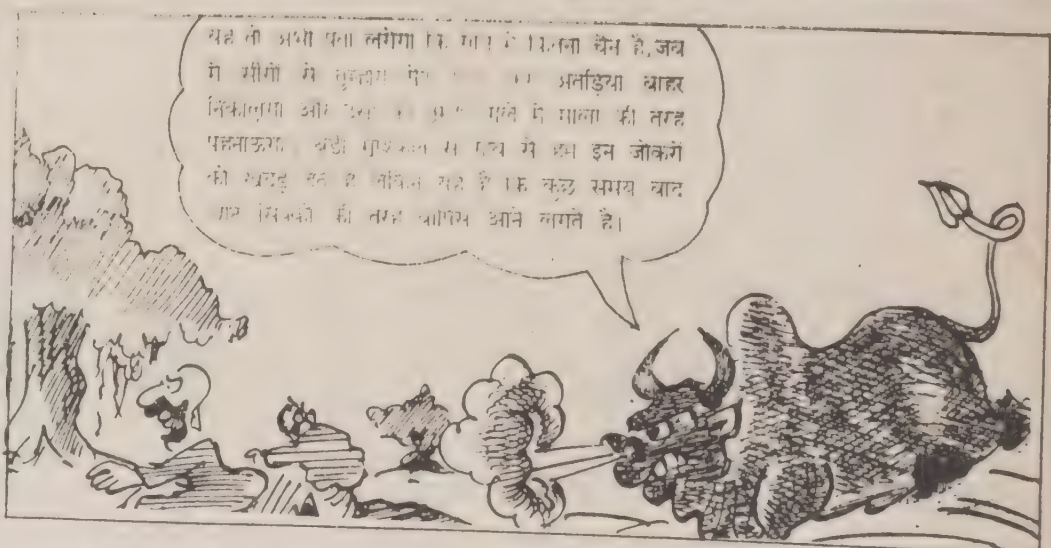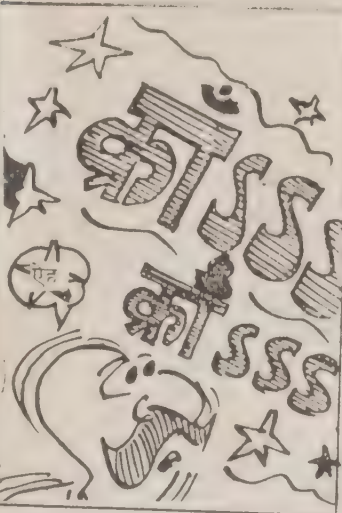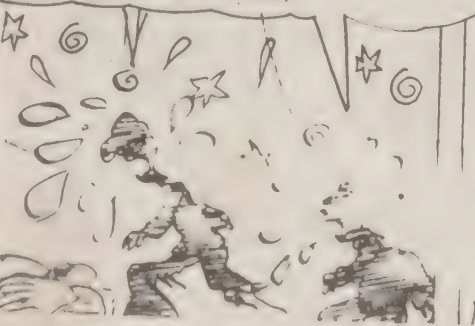
सिलबिल पिलपिल के कारनामे अगले अंक में पढ़िये।
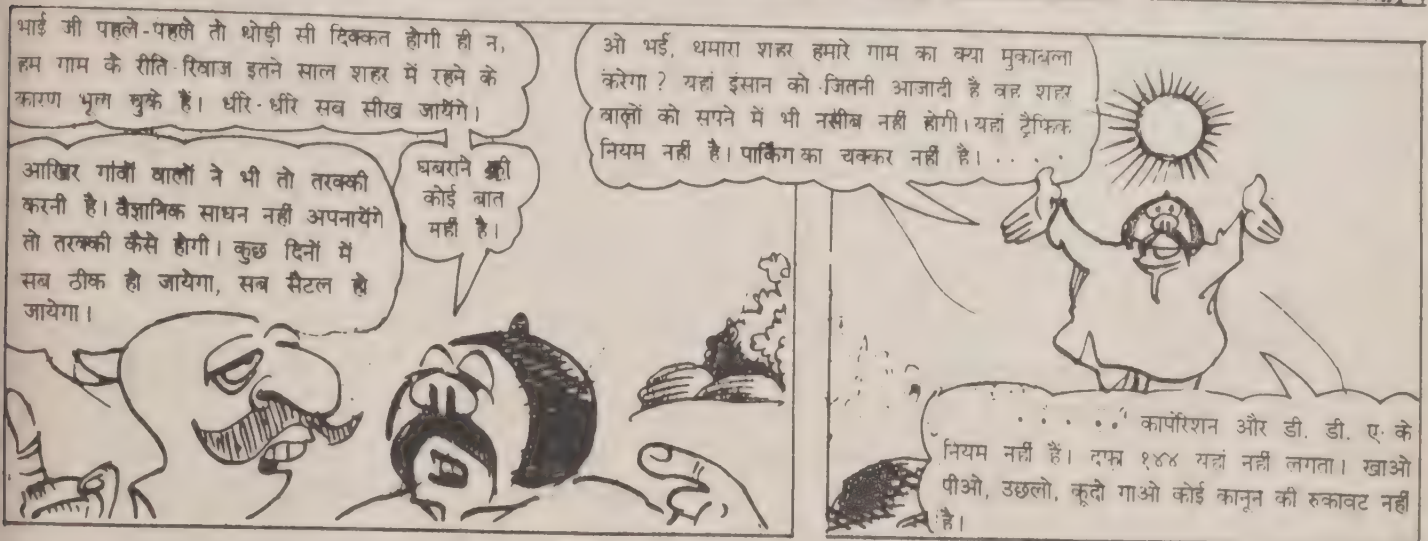
पृष्ठ १७ से आगे

लगा. लगभग तीन वर्ष पूर्व वह अपने माता-पिता के साथ मि. हरीश के घर आकर रहा था. कुछ थोड़ी सी तनख्वाह तथा इमारत के पीछे छोटे से घर के बदले हरी की मां मि. हरीश के घर की देखभाल करती थीं. मि. हरीश अविविाहित थे, हरी के पिता इन्शोरेन्स के एक ऐजन्ट थे जो अपना धंधा बढ़ाने के प्रयास में लगे थे. छः माह पहले, उनका धंधा कुछ बढ़ने ही लगा था कि निकट के मॉडल टाउन इलाके के एक व्यापारी के घर चोरी हुई जिसमें तीन बहुमूल्य आधुनिक पेन्टिग उनके फ्रेमों में से काट कर चुरा ली गई थीं. चोर या तो घर में एक बहुत ही छोटी खिड़की से या फिर सदर दरवाजे की ताली से ताला खोल कर घुसा था.

पुलिस को पता चला था कि हरी के पिता महेशचन्द्र दो सप्ताह पहले इन्शोरेन्स के सिलसिले में उस घर में गये थे. जाहिर है वे तस्वीरें उन्होंने वहां देखी थीं, परन्तु उनका कहना था कि उन्हें कला का कुछ भी ज्ञान न था और उन पेन्टिंग के बहुमूल्य होने का भी आभास नहीं था.

परन्तु क्योंकि वे उस घर में गये थे. पुलिस ने महेशचन्द्र के घर की तालाशी ली थी और रसोईघर में फर्श पर बिछे लिनो-लियम के नीचे बिछी हुई पेन्टिंग ढूंढ निकाली थीं. उन्होंने हरी के पिता को गिरफ्तार कर लिया था तथा मुकदमा चलने पर उन्हें अपराधी साबित कर पांच वर्ष के लिये जेल भेज दिया था. इस घटना को तीन माह हो चुके हैं. हरी के पिता ने अन्त तक अपने को निर्दोष बताया था और कहा था उन्हें बिलकुल भी नहीं पता चोरी की गई पेन्टिग वहां कैसे पहुंच गई थीं, लेकिन जूरी ने उन्हें दोषी ठहरा दिया था.

'परन्तु चोरी उन्होंने नहीं की थी'' हरी अन्त में बोला, 'मेरे पिता चोर नहीं हैं. यदि वे इस किस्म के आदमी होते तो मेरी मां और मुझे अवश्य पता होता. परन्तु अब पुलिस का ख्याल है कि पिछले दस वर्ष से शहर में हुई कलात्मक कार्यों की चोरी में इनका ही हाथ था, क्योंकि वह इन्शोरेन्स ऐजेन्ट हैं और उन्हें लोगों से रात को भी मिलने जाना पड़ता है."

'इसलिये मैं तुम लोगों को इस काम में मेरी सहायता के लिये नियुक्त करना चाहता हूं. हालांकि मैं तुम्हें अधिक पैसे नहीं दे पाऊंगा क्योंकि मेरे सेविन्ग बैंक में केवल सौ ही रुपये हैं, परन्तु यदि तुम मेरे पिता की कुछ सहायता कर पाओगे तो सारे पैसे मैं तुम्हें दे दूंगा.

राजू समस्या के विषय में सोचने लगा, श्याम और महिन्दर हतप्रभ से मुंह ताकने लगे. जो निष्कर्ष उन्होंने निकाला था, उससे पुलिस को महेशचन्द्र के चोरी करने का पूरा विश्वास होगा तभी उन्हें जेल भेजा गया था.

''यह समस्या बहुत कठिन है हरी'' राजू बोला, 'इसमें पता लगाने का कुछ अधिक मौका तो दिखाई नहीं दे रहा''

'यदि काम आसान होता तो मुझे जासूसों की सहायता की आवश्यकता न पड़ती. हरी गरम होते हुए बोला, 'तुम कार्ड लिये फिरते हो हम जासूस हैं. देखते हैं तुम क्या जासूसी करते हो, कुछ कर के दिखाओ.

राजू ने अपना निचला होठ दबाया, इससे उसे हमेशा सोचने में सहायता मिलती थी. ''हम इस विषय में खोज अवश्य करेंगे,'' उसने सहमत होते हुए कहा, 'परन्तु यदि पेन्टिग तुम्हारे पिता ने नहीं चुराई थीं तो वे तुम्हारी रसोई में लिनोलियम के नीचे कैसे पहुंच गईं.''

'क्या तुम्हारा पीछे के दरवाजे का ताला बन्द नहीं होता था?''

'ताला तो लगा होता था परन्तु यह एक बहुत ही पुराना घर है और पुराने घरों का ताला तोड़ना तुम जानते ही हो कितना आसान होता है. परन्तु हमें इस बात का कोई ध्यान नहीं था क्योंकि हमारे घर में चुराने लायक कुछ ऐसा था ही नहीं.''

'हूं।'' राजू ने होंठ दबाते हुए कहा. 'यह बात तो जाहिर है कि पेन्टिग रसोईघर के लिनोलियम के नीचे ही छिपाई गई थीं, पीछे का दरवाजा तोड़कर घुसने पर सबसे पहला यहीं स्थान चोरी की पेंटिग छिपाने के काम लाया जा सकता था. वहां पेन्टिंग छिपा कर घर में आगे घुसे बिना ही छिपाने वाला वापिस भाग गय होगा

'बहुत ठीक अन्दाज लगाया तुमने राजू, मेरे ख्याल से ऐसा ही हुआ होगा'' महिन्दर बोला.

'हो सकता है मि. हरीश ने चुरा कर उन्हें वहां छिपाया हो?'' श्याम बोला.

'पुलिस ने मि. हरीश पर कोई शक किया था''? राजू ने पूछा।

मि. हरीश ऐसा नहीं कर सकते, हरी ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया. 'वे हमें बहुत चाहते थे, और दूसरी बात यह है कि जिस दिन पेन्टिग चोरी हुई थीं वे सारी रात घर में ही थे.''

'इससे बात साफ हो जाती है, परन्तु फिर भी मुझे यह मामला कुछ अजीब सा ही लग रहा है.'' ''अजीब क्या है''? महिन्दर ने उत्सुक हो कर पूछा.

(क्रमशः)

बन्द करो बकवास
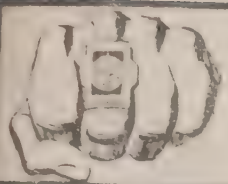
फैण्टम-जंगल शहर
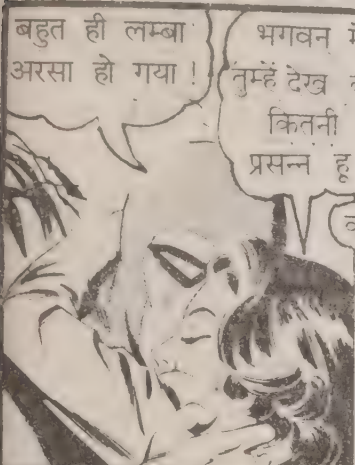
बहुत ही लम्बा अरसा हो गया !
भगवन मैं तुम्हें देख कर कितनी प्रसन्न हूं
हेलोईस . . .और किट ! बहुत बड़े हो गये हैं। अरे ! बात भी करते है ?
करीब-करीब
डाडा
मामा

तुम हमारी प्रतीक्षा यहां क्यों कर रहे थे ?
मैं तुम्हें एक अनोखी चीज दिखाने वाला हूं
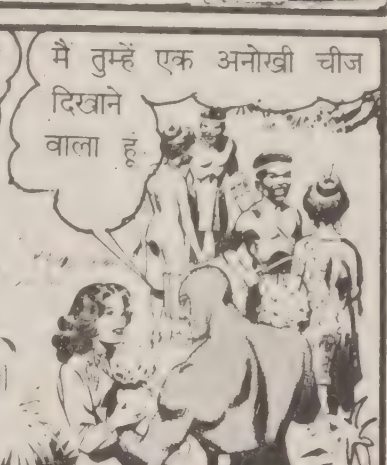
प्रिय डेविल . . .वह ड्राईवर और वह बड़ा पक्षी कौन है ?
वह तोन्डो है. वह हमारे पालतू कबूतरों की देखभाल करता है और वह फराका अपना बाज है
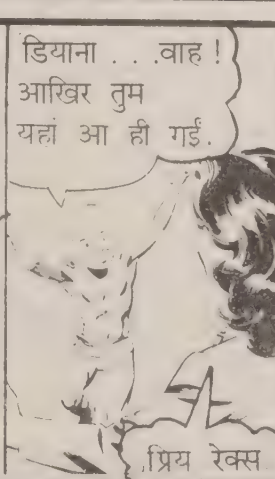
डियाना . . .वाह ! आखिर तुम यहां आ ही गई.
प्रिय रेक्स

रुको ! जब तक कि तुम देख नहीं लेतीं
चुप रहो रेक्स-वह तो अचम्भा है
क्या हम उसे देख सकते हैं ? और घर जा सकते हैं मैं बहुत थक गई हूं।
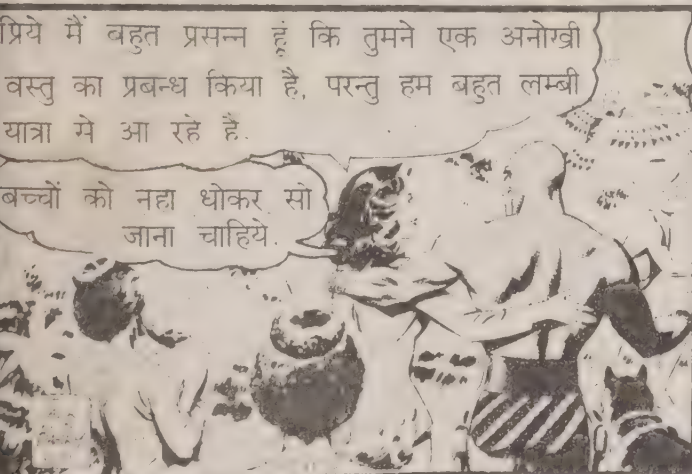
प्रिये मैं बहुत प्रसन्न हूं कि तुमने एक अनोखी वस्तु का प्रबन्ध किया है, परन्तु हम बहुत लम्बी यात्रा मे आ रहे है.
बच्चों को नहा धोकर सो जाना चाहिये.

तुमने कहा था मेरे निवास का प्रबन्ध कर दोगे क्या हम वहां जा सकते हैं ?
हां ! वही तो अचम्भा है !

वह देखो उधर है।
?!

वह क्या है ?
मेरा अचम्भा !

वह तो हवा में एक महल सा दिख रहा है
हवा में महल ही है, डियाना वही तुम्हारा नया घर है

घर !

...क पेड़घर ! अरे . . .हम अब यहीं रहेंगे.

हां . . .अन्दर चल कर देखो तो.

डियाना ! क्या ऐसा बढ़िया पेड़घर तुमने पहले कभी देखा है.
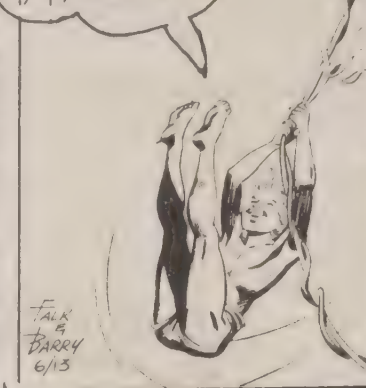
रस्सेवाले लोगों ने इसे बनाया है. क्या तुम्हें पसन्... नहीं आया.

?

FALK & BARRY 6/13

प्रिये ! यह एक बहुत ही सुन्दर पेड़घर है परन्तु मुझे तो लगभग प्रतिदिन दफ्तर जाना होगा।

कार से केवल आधा घंटा ही लगेगा.

FALK & BARRY 6/14
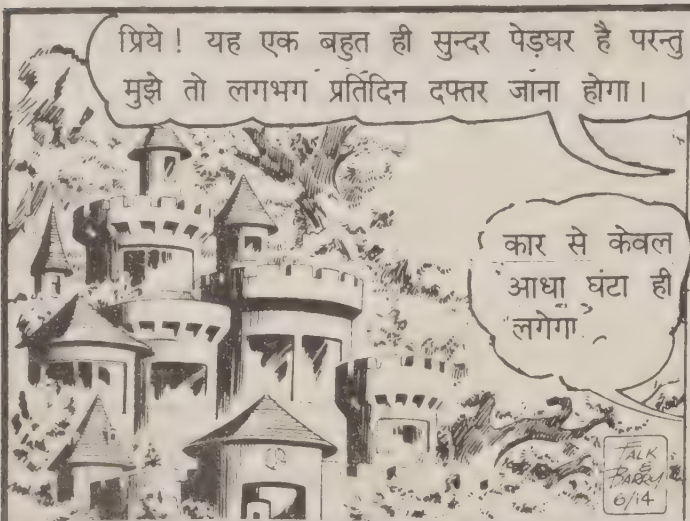
परन्तु बच्चों का पालन पोषण वहां कैसे हो पायेगा ?

जैसा पक्षी करते हैं सचमुच डियाना उन्हें इसमें बहुत आनन्द आयेगा

इसके अतिरिक्त वे खोपड़... गुफा में भी तो रहेंगे !

क्या तुम्हें अच्छ... नहीं लगा...

यह अति सुन्दर है परन्तु क्या इतना ही प्रेक्टिकलभी है ?

चित्र वर्ग पहेली

शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें।

दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बांयीं ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

र ख स त ब ू ू

ी ी व ध ज ा र

ी ज़ र ग न ा व ब

ा ा ब ब र र ्र

ॆ ा क्र र त्र न ज

ण र प ा त र म ो

ब र क त

सही उत्तर

इनाम 10/- रुपये

टेलीफोन विभाग वालों ने वर्मा जी के टेलीफोन का १५-११-८० का बिल भेजा। बिल वास्तव में १५-११-८१ का था। १९८० वर्ष में तो उनके यहां टेलीफोन ही नहीं लगा था। वर्मा जी ने टेलीफोन विभाग वालों को फोन पर क्या कहा ?

अन्तिम तिथि- १०-४-८२

दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल-पहला इनाम ३० रु.
कैमल-दूसरा इनाम २० रु.
कैमल-तीसरा इनाम १० रु.
कैमल-आश्वासन इनाम ५
दीवाना-आश्वासन इनाम ५
कैमल-सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... उम्र ....

पता ....

....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जावे।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: १५-४-८२.

CONTEST NO.24

पृष्ठ २० से आगे

—	मैच	पारियां	नॉट आऊट	उच्चतम स्कोर	रन	औसत
डेरेक अंडरवुड	६	७	४	१३	५७	१२.६६
रोजर टेलर	६	७	१	३३	५७	९.५०
जोहनलीवर	२	२	०	२	३	१.५०
जे.ई. एम्बुरी	३	४	०	२	४	——
पी.जे. एलॉट	१	१	—	६	६	१.००

गेंदबाजी

	ओवर	मेडन	रन	विकेट	सर्वश्रेष्ठत-प्रदर्शन	औसत
जोहनलीवर	७३	१६	२०४	७	५-१००	२९.१४
बॉब विलिस	१८९.१	३०	३८१	१२	३-७५	३१.७५
जे.ई. ऐम्बुरी	९९.००	३२	२२२	६	२-३५	३७.००
आई. टी. बॉथम	२४०.३	५२	६६१	१७	५-६१	३८.८८
डेरेक अंडरवुड	२२८.००	९९	४३८	१०	३-४५	४३.८०
ग्राहम डिली	१०५	१५	३०८	७	४-४४७	४४.५०

अंक नं. ३ की पहेली का हल

मिलनसार समानांतर
लगनशीलता भटियारिन
पीलीभीत सही उत्तर—मिली भगत

विजेता (निर्णय लाटरी द्वारा)
राम अवतार अग्रवाल
खतौली कोल्ड स्टोरेज
'खतौली, मुजफ्फर नगर (उ. प्र.)

दीवाना-कैमल रंग भरी प्रतियोगिता
नं. २१ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार — नितेश कुमार सोनी—कोटा
द्वितीय पुरस्कार—रिंकू सहगल—दिल्ली
तृतीय पुरस्कार—अनुपमासिंह—कासगंज, एटा

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१. संगीता जैन—इन्दौर, २. महिन्दर सिंह—पठानकोट, ३. अश्वनी कुमार गुलाटी—जलन्धर, ४. संदीप कुमार अग्रवाल अमृतसर, ५. मनोज कुमार—मुजफ्फर नगर।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. मनीषा-के—वैस्टमेम्बलम, मद्रास, २. अतुल सचदेवा—लारेंस रोड, दिल्ली, ३. राजा डोगरा—देहरादून, ४. शरद कुमार लाड़—जबलपुर, ५. अनिल सचदेवा शालीमार बाग, दिल्ली !

सर्टीफिकेट

१. अनिता धालीवाल—नई दिल्ली, २. राजीव कुमार बेरीवाल—रायगढ़, ३. कैडे जोहर सैफिद्दीन मनासी—रतलाम, ४. सूर्य प्रकाश गुप्ता—इलाहाबाद, ५. पटेल रमेश कुमार पुरुषोत्तम दास—अहमदाबाद, ६. नरेश कुमार गर्ग—भटिण्डा, ७. प्रदीप कुमार जैन—मेरठ शहर, ८. अल्का के. मोदी—बम्बई, ९. गिरीश कुमार धवन—गांधी धाम-कूच, १०. राजेश गांधी धान, कूच।

मनोज कुमार शर्मा सी-६६, शहीद भगत सिंह, पुर, दिल्ली-११००५३ १३ वर्ष पढ़ना.

मो. राजेन्द्र कुमार गलेमर ४६ शहीद न्यू उसमान रोड गया-१ बिहार, क्रिकेट खेलना

विनोद कुमार आर. ए. नरीगर सितारगज १३ वर्ष क्रिकेट खेलना पढ़ना।

दलजीत तिवाड़ी आदर्श कालोनी नकोदर जि. जालन्धर १९ वर्ष दीवाना पढ़ना फिल्में देखना

संजय कुमार जैन ✗/२६६७ रघुवर पुरा दिल्ली २० वर्ष पत्र मित्रता, हाथी से कुश्ती लड़ना, खाना

वलेश कुमार नेहरू रोड बड़ौत मेरठ २१ वर्ष पत्र मित्रता, धुआ

नीतु कुमार, रामा कालोनी रोड बड़ौत मेरठ २० वर्ष मित्रता, चूहे दौड़ना

पंकज कुमार त्रिपाठी ए-४२ इन्द्र-पुरी न्यू आगरा १४ वर्ष क्रिकेट खेलना पढ़ना फिल्म देखना

मो. प्रवेज उद्दीन, आजाद मंजिल, भोगलपुरा, टुकड़ी, पटना, १५ वर्ष, किताब पढ़ना

बलविन्द्र अरोड़ा १, न्यू टाऊन भोगल २० वर्ष पत्र मित्रता मैगजीन पढ़ना

पूरन लाल १/१८ बेंदियान स्ट्रीट मोरी गेट, दिल्ली १७ वर्ष फिल्में देखना

विजय कुमार १/१२ बेंदियान मोरी गेट दिल्ली ११०००६ २० वर्ष डेटिंग

अनिल कुमार १/१८ बेंदियान स्ट्रीट मोरी गेट, दिल्ली १५ वर्ष डान्स करना, क्रिकेट खेलना।

एम एच खा अमर टेलर्स कोतवालान रामपुर यू. २४४९०१ २५ पत्र मित्रता

नरेन्द्र शर्मा ४३/५ के. ई. लाईन अम्बाला छावनी २३ वर्ष फोटो खिंचवाना

गिरीश चन्द्र मिश्र न-४६ सोगापथ बालाघाट म.प्र. २० वर्ष दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना,

अनिल कुमार श्रेष्ठ सरस्वती बाजार, धुलिखेल, नेपाल १६ वर्ष पत्रपत्रिका पढ़ना दोस्ती करना।

नवाबी, मो. मट्टी, अमरोहा, १५ वर्ष, बॉली बॉल खेलना, पढ़ना, दोस्ती करना।

मोती लाल मंगलानी लालमाडी जबलपुर १६ वर्ष क्रिकेट खेलना दोस्ती करना

सुभाष बन्सल लक्ष्मी बैरायटी स्टोर पीली बगा (राजस्थान) २५ वर्ष ट्यूशन पर डान्स करना

प्रिंस सूद, गली न. ८, सरहदी पटियाला पंजाब १४ वर्ष मित्रता

प्रदीप कुमार जैन प्रतापमल बिना मकया मार्ग सीकर राजस्थान १७ वर्ष पत्र मित्रता

राजेन्द्र कुमार मुलन्दाजी शाह कसीद, केन्द्र रामगंज अजमेर १४ वर्ष कसीदा कारी करना

ब्रिजेश कुमार जिला धनबाद, बिहार पो. सिन्दरी जे-२७ २० वर्ष घूमना फिरना

शकाअत हुसैन दुर्गा चौक तलैया भोपाल म.प्र. १८ वर्ष पढ़ना खेलना

तिलक राज अरोड़ा म. न. १५६ खवेश ज्ञान खुरजा-२०३१३१ उ.प्र. १७ वर्ष फरमाईश भेजना

ब्रजकिशोर प्रसाद प्रकाश ज्वेलर्स काली बाड़ी रोड, सिलीगुड़ी टाउन २२ वर्ष पत्र मित्रता

तरुण कुमार सिंह २०१ ओसान बाग इन्दौर १८ वर्ष पिक्चर देखना

सैय्यद अली हुसैन रिजवी दरबार कला अमरोहा १९ वर्ष अफसाने लिखना व पढ़ना

सतपाल सैनी कृष्णा पुरा पानीपत जिला करनाल २१ वर्ष पत्र लिखना

पंकज जैन c/o श्री सरजन कुमार जैन रेवाड़ी १६ वर्ष दीवाना, क्रिकेट खेलना

सुरबिन्द्र सिंह मचंदेवा असन्धर करनाल -१३२०३९ १७ वर्ष सिनेमा देखना

सुधांशु शेखर त्रिपाठी, १४/३०, कुदालकर की मोठ, लश्कर, ग्वालियर, १६ वर्ष,

वसीम शेख, कम पाउंड बीमर, पटना, १६ वर्ष, लाइब्रेरी में जाकर पुस्तक पढ़ना।

कमलेश कुमार मोनेजी मोनिया का रास्ता जेडी की म. न. १७६ जयपुर राजस्थान १८ वर्ष

तेजभान सक्सेना १५२, चौक ककरखेड़ा मेरठ कैंट २१ वर्ष फुटबाल खेलना

रवि कपूर २६/१०८ रोटी गोदाम फीलखाना कानपुर २८ वर्ष फिल्म, लेख लिखना, प्यार करना।

राकेश कपूर मैनी इंजि. वर्क्स बाई पास रोड, चास १६ वर्ष पत्र मित्रता।

अमित कुमार टकवाल सी ३ जुनी कसेरा बाटबल इन्दौर १२ वर्ष अभिनय पत्र मित्रता

अनिल नारंग ४३८, शाहगंज इलाहाबाद २११००३ २४ वर्ष संग्रह डाक टिकट पत्र मित्रता,

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२.
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ————————

पता ————————

आयु ———— शौक ————

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

परोपकारी

रामू ओ रामू..... रामू..... अरे सुनता नहीं.....?

इतनी देर से चिल्ला रहा हूँ! कंबख्त सुनता ही नहीं!

आजकल इसका दिमाग खूब ढ़ गया है! मैं इसे बिना बताए ीं नया नौकर ले आता हूँ! फिर इसकी छुट्टी कर दूँगा!

शाम को-
भगवान का शुक्र है नए नौकर का इंतज़ाम हो गया. वरना आजकल इतनी जल्दी नौकर कहाँ मिलते हैं!

रामू जैसे ही इस नए नौकर को देखेगा उसके पैरों तले धरती खिसक जाएगी! ही ही....मज़ा आ जाएगा!

घर पहुँचते ही-
मालिक, आप एक और नौकर ले आए! धन्य हैं आप! मैं तो कई दिनों से अपना एक असिस्टेंट रखने की सोच रहा था!

R.N. 10598/65 Regd. No. D(DN)-275